# LA VOZ DE CUBA.

PERIODICO POLITICO FUNDADO POR D. GONZALO CASTAÑON.

CUARTA EPOCA — Juéves 7 de Marzo de 1878.—Sto. Tomás de Aquino, doctor. — AÑO XI.—NUMERO 56.


## LOTERIA DE LA ISLA DE CUBA

*LISTA de los números premiados en el sorteo ordinario núm° 1011, cuyo acto se ha celebrado ayer 6 de marzo de 1877.*

| NÚMS. | PREMIOS. | NÚMS. | PREMIOS. | NÚMS. | PREMIOS. |
|---|---|---|---|---|---|
| 45 | 1000 | 5983 | 1000 | 12280 | 500 |
| 69 | 1000 | 5999 | 500 | 12333 | 500 |
| 76 | 500 | | | 12375 | 500 |
| 85 | 500 | 6042 | 500 | 12391 | 500 |
| 120 | 5000 | 6092 | 500 | 12421 | 1000 |
| 130 | 500 | 6105 | 500 | 12467 | 500 |
| 158 | 500 | 6154 | 500 | 12477 | 500 |
| 217 | 500 | 6173 | 500 | 12562 | 500 |
| 293 | 500 | 6177 | 500 | 12646 | 500 |
| 294 | 500 | 6235 | 500 | 12650 | 500 |
| 297 | 500 | 6249 | 500 | 12691 | 500 |
| 298 | 500 | 6292 | 1000 | 12712 | 5000 |
| 322 | 500 | 6293 | 500 | 12795 | 500 |
| 335 | 500 | 6307 | 500 | 12853 | 500 |
| 388 | 500 | 6360 | 500 | 12932 | 500 |
| 419 | 500 | 6390 | 500 | 12957 | 500 |
| 428 | 500 | 6437 | 500 | 12968 | 500 |
| 441 | 500 | 6457 | 500 | 12991 | 1000 |
| 527 | 500 | 6494 | 500 | | |
| 733 | 500 | 6525 | 500 | 13007 | 500 |
| 803 | 500 | 6560 | 500 | 13047 | 500 |
| 850 | 500 | 6577 | 1000 | 13053 | 500 |
| 872 | 500 | 6593 | 500 | 13063 | 500 |
| 873 | 500 | 6673 | 1000 | 13067 | 500 |
| 909 | 500 | 6731 | 500 | 13112 | 500 |
| 910 | 500 | 6745 | 500 | 13182 | 200000 |
| | | 6787 | 500 | 13204 | 500 |
| 915 | 500 | 6796 | 500 | 13263 | 500 |
| 924 | 500 | 6802 | 1000 | 13266 | 500 |
| 953 | 500 | 6810 | 500 | 13341 | 500 |
| 958 | 500 | 6886 | 1000 | 13347 | 500 |
| 993 | 500 | 6900 | 500 | 13395 | 1000 |
| 999 | | | | 13413 | 500 |
| 1005 | 500 | 7028 | 500 | 13420 | 500 |
| 1035 | 500 | 7055 | 500 | 13437 | 1000 |
| 1038 | 500 | 7116 | 500 | 13491 | 500 |
| 1050 | 500 | 7251 | 500 | 13577 | 500 |
| 1091 | 500 | 7279 | 500 | 13584 | 1000 |
| 1112 | 500 | 7298 | 500 | 13586 | 500 |
| 1121 | 500 | 7328 | 500 | 13620 | 1000 |
| 1134 | 500 | 7351 | 1000 | 13701 | 500 |
| 1148 | 500 | 7355 | 500 | 13761 | 1000 |
| 1167 | 500 | 7417 | 1000 | 13781 | 1000 |
| 1182 | 500 | 7452 | 500 | 13796 | 500 |
| 1252 | 500 | 7468 | 500 | 13837 | 500 |
| 1268 | 1000 | 7475 | 500 | 13863 | 1000 |
| 1297 | 500 | 7515 | 1000 | 13895 | 500 |
| 1298 | 500 | 7528 | 500 | 13903 | 500 |
| 1346 | 500 | 7539 | 500 | 13916 | 10000 |
| 1724 | 500 | 7569 | 500 | 13924 | 1000 |
| 1732 | 500 | 7583 | 1000 | 13957 | 500 |
| 1832 | 1000 | 7601 | 500 | | |
| 1837 | 500 | 7675 | 500 | 14041 | 500 |
| 1838 | 500 | 7677 | 500 | 14045 | 500 |
| 1881 | 500 | 7688 | 1000 | 14079 | 500 |
| 1885 | 500 | 7689 | 500 | 14129 | 500 |
| 1900 | 1000 | 7762 | 1000 | 14182 | 500 |
| 1920 | 500 | 7763 | 500 | 14218 | 500 |
| 1957 | 500 | 7764 | 500 | 14236 | 500 |
| 1978 | 500 | 7875 | 500 | 14239 | 1000 |
| 1993 | 500 | 7881 | 500 | 14305 | 500 |
| 1997 | 500 | 7884 | 1000 | 14326 | 500 |
| | | 7985 | 500 | 14330 | 500 |
| 2007 | 500 | 7991 | 500 | 14399 | 500 |
| 2025 | 500 | 7995 | 500 | 14437 | 500 |
| 2039 | 1000 | | | 14511 | 500 |
| 2059 | 500 | 8002 | 500 | 14513 | 500 |
| 2098 | 500 | 8246 | 500 | 14530 | 500 |
| 2115 | 500 | 8262 | 500 | 14564 | 500 |
| 2129 | 1000 | 8276 | 1000 | 14579 | 500 |
| 2171 | 500 | 8291 | 500 | 14589 | 500 |
| 2175 | 500 | 8327 | 500 | 14615 | 500 |
| 2188 | 500 | 8338 | 500 | 14618 | 500 |
| 2203 | 500 | 8358 | 500 | 14702 | 500 |
| 2207 | 500 | 8471 | 500 | 14729 | 500 |
| 2245 | 500 | 8538 | 500 | 14744 | 500 |
| 2261 | 500 | 8558 | 500 | 14745 | 500 |
| 2302 | 500 | 8569 | 500 | 14749 | 5000 |
| 2317 | 500 | 8583 | 500 | 14761 | 500 |
| 2378 | 500 | 8620 | 500 | | |
| 2384 | 500 | 8637 | 500 | 15044 | 500 |
| 2389 | 1000 | 8675 | 1000 | 15055 | 500 |
| 2457 | 500 | 8702 | 500 | 15060 | 500 |
| 2499 | 500 | 8710 | 500 | 15075 | 50000 |
| 2508 | 500 | 8736 | 500 | 15101 | 500 |
| 2548 | 500 | 8754 | 500 | 15133 | 500 |
| 2598 | 500 | 8811 | 1000 | 15214 | 500 |
| 2610 | 500 | 8846 | 500 | 15226 | 500 |
| 2674 | 1000 | 8895 | 500 | 15262 | 500 |
| 2679 | 500 | 8921 | 500 | 15276 | 500 |
| 2682 | 500 | 8930 | 500 | 15303 | 500 |
| 2683 | 500 | | | 15317 | 500 |
| 2691 | 500 | 9033 | 500 | 15347 | 1000 |
| 2692 | 500 | 9038 | 500 | 15361 | 500 |
| 2697 | 500 | 9066 | 500 | 15368 | 500 |
| 2698 | 500 | 9079 | 1000 | 15390 | 1000 |
| 2884 | 500 | 9088 | 1000 | 15436 | 500 |
| | | 9090 | 500 | 15437 | 500 |
| 3021 | 1000 | 9093 | 1000 | 15473 | 500 |
| 3038 | 500 | 9241 | 500 | 15530 | 500 |
| 3063 | 5000 | 9272 | 500 | 15547 | 500 |
| 3066 | 500 | 9286 | 500 | 15576 | 500 |
| 3079 | 500 | 9288 | 1000 | 15596 | 500 |
| 3099 | 500 | 9301 | 500 | 15644 | 1000 |
| 3151 | 5000 | 9414 | 500 | 15704 | 10000 |
| 3185 | 500 | 9433 | 500 | 15739 | 500 |
| 3190 | 500 | 9440 | 500 | 15766 | 500 |
| 3195 | 500 | 9452 | 500 | 15828 | 500 |
| 3279 | 500 | 9487 | 500 | 15848 | 500 |
| 3280 | 500 | 9490 | 1000 | 15905 | 500 |
| 3288 | 500 | 9525 | 500 | | |
| 3354 | 500 | 9560 | 500 | 16052 | 500 |
| 3426 | 500 | 9634 | 500 | 16127 | 500 |
| 3433 | 500 | 9637 | 500 | 16158 | 500 |
| 3499 | 500 | 9713 | 500 | 16182 | 500 |
| 3535 | 500 | 9720 | 1000 | 16201 | 1000 |
| 3539 | 1000 | 9797 | 500 | 16276 | 500 |
| 3577 | 500 | 9919 | 500 | 16301 | 500 |
| 3579 | 500 | 9930 | 500 | 16336 | 500 |
| 3598 | 1000 | 9934 | 500 | 16339 | 500 |
| 3600 | 500 | 9949 | 500 | 16348 | 500 |
| 3608 | 500 | 9987 | 500 | 16359 | 500 |
| 3641 | 500 | | | 16375 | 500 |
| 3691 | 500 | 10092 | 1000 | 16389 | 500 |
| 3733 | 500 | 10020 | 1000 | 16413 | 500 |
| 3821 | 500 | 10052 | 500 | 16446 | 500 |
| | | 10087 | 500 | 16499 | 1000 |
| 4004 | 500 | 10464 | 500 | 16573 | 500 |
| 4030 | 500 | 10169 | 500 | 16581 | 500 |
| 4034 | 500 | 10235 | 500 | 16678 | 500 |
| 4142 | 1000 | 10253 | 500 | 16718 | 5000 |
| 4169 | 500 | 10275 | 500 | 16724 | 500 |
| 4289 | 500 | 10406 | 500 | 16751 | 500 |
| 4317 | 500 | 10411 | 500 | 16767 | 500 |
| 4330 | 500 | 10454 | 500 | 16805 | 500 |
| 4339 | 500 | 10513 | 500 | 16844 | 500 |
| 4380 | 500 | 10524 | 500 | 16848 | 500 |
| 4396 | 1000 | 10589 | 500 | 16908 | 500 |
| 4446 | 500 | 10621 | 500 | 16934 | 500 |
| 4463 | 500 | 10646 | 500 | 16999 | 1000 |
| 4504 | 500 | 10772 | 500 | | |
| 4534 | 500 | 10716 | 500 | 17053 | 500 |
| 4552 | 500 | 10719 | 5000 | 17072 | 500 |
| 4554 | 500 | 10734 | 500 | 17073 | 500 |
| 4562 | 500 | 10735 | 500 | 17074 | 500 |
| 4640 | 500 | 10748 | 500 | 17084 | 500 |
| 4641 | 500 | 10810 | 500 | 17131 | 500 |
| 4648 | 500 | 10825 | 500 | 17198 | 500 |
| 4695 | 500 | 10839 | 500 | 17221 | 500 |
| 4716 | 500 | 10884 | 500 | 17236 | 500 |
| 4741 | 500 | 10893 | 500 | 17304 | 500 |
| 4755 | 500 | 10930 | 500 | 17312 | 500 |
| 4810 | 500 | 10976 | 500 | 17341 | 1000 |
| 4811 | 500 | 10990 | 500 | 17349 | 500 |
| 4817 | 500 | | | 17378 | 500 |
| 4827 | 500 | 11040 | 500 | 17445 | 500 |
| 4836 | 500 | 11092 | 500 | 17490 | 500 |
| 4912 | 500 | 11095 | 500 | 17569 | 500 |
| 4920 | 500 | 11118 | 1000 | 17651 | 500 |
| 4936 | 500 | 11132 | 1000 | 17709 | 1000 |
| 4958 | 500 | 11161 | 500 | 17779 | 500 |
| 4959 | 500 | 11199 | 1000 | 17877 | 500 |
| 4961 | 500 | 11202 | 1000 | 17898 | 500 |
| 4975 | 1000 | 11223 | 500 | 17900 | 1000 |
| | | 11225 | 500 | 17926 | 500 |
| 5009 | 500 | 11303 | 500 | 17928 | 500 |
| 5030 | 1000 | 11313 | 500 | 17936 | 500 |
| 5054 | 500 | 11337 | 500 | 17954 | 500 |
| 5103 | 1000 | 11375 | 500 | 17957 | 1000 |
| 5151 | 500 | 11407 | 500 | 17965 | 500 |
| 5209 | 500 | 11444 | 500 | | |
| 5225 | 500 | 11600 | 500 | 18022 | 500 |
| 5239 | 500 | 11615 | 500 | 18035 | 1000 |
| 5284 | 500 | 11641 | 500 | 18058 | 500 |
| 5288 | 500 | 11666 | 500 | 18097 | 500 |
| 5359 | 500 | 11710 | 500 | 18184 | 500 |
| 5368 | 500 | 11750 | 500 | 18223 | 500 |
| 5414 | 500 | 11777 | 500 | 18243 | 500 |
| 5423 | 500 | 11803 | 500 | 18265 | 500 |
| 5425 | 500 | 11841 | 500 | 18279 | 500 |
| 5461 | 500 | 11863 | 500 | 18310 | 1000 |
| 5479 | 500 | 11935 | 500 | 18320 | 500 |
| 5567 | 500 | 11953 | 500 | 18325 | 1000 |
| 5575 | 500 | 11957 | 500 | 18395 | 1000 |
| 5642 | 500 | 11964 | 500 | 18479 | 500 |
| 5648 | 500 | 11997 | 1000 | 18498 | 500 |
| 5706 | 1000 | | | 18547 | 500 |
| 5750 | 500 | 12004 | 1000 | 18557 | 500 |
| 5845 | 500 | 12134 | 500 | 18582 | 500 |
| 5920 | 500 | 12080 | 500 | 18586 | 500 |
| 5941 | 500 | 12152 | 500 | 18659 | 500 |
| 5944 | 500 | 12214 | 500 | 18672 | 500 |
| 5958 | 500 | 12268 | 500 | 18675 | 500 |
| 5983 | 1000 | 12360 | 500 | 18685 | 500 |
| 5999 | 500 | 12333 | 500 | 18753 | 500 |
| | | | | 18800 | 500 |
| | | | | 18847 | 500 |
| | | | | 18855 | 500 |
| | | | | 18883 | 500 |
| | | | | 18926 | 500 |
| | | | | 18941 | 500 |
| | | | | 18942 | 1000 |
| | | | | 18946 | 500 |
| | | | | 18957 | 500 |
| | | | | 18964 | 500 |
| | | | | 18965 | 1000 |
| | | | | 18969 | 500 |
| | | | | 18977 | 500 |
| | | | | 18998 | 500 |
| | | | | 19083 | 500 |
| | | | | 19100 | 500 |
| | | | | 19101 | 500 |
| | | | | 19103 | 500 |
| | | | | 19145 | 500 |
| | | | | 19202 | 500 |
| | | | | 19263 | 500 |
| | | | | 19336 | 500 |
| | | | | 19356 | 500 |
| | | | | 19416 | 500 |
| | | | | 19439 | 500 |
| | | | | 19444 | 500 |
| | | | | 19446 | 500 |
| | | | | 19447 | 500 |
| | | | | 19451 | 500 |
| | | | | 19452 | 500 |
| | | | | 19453 | 500 |
| | | | | 19454 | 500 |
| | | | | 19455 | 500 |
| | | | | 19456 | 500 |
| | | | | 19457 | 500 |
| | | | | 19458 | 500 |
| | | | | 19459 | 500 |
| | | | | 19460 | 500 |
| | | | | 19461 | 500 |
| | | | | 19462 | 500 |
| | | | | 19463 | 500 |
| | | | | 19464 | 500 |
| | | | | 19465 | 500 |
| | | | | 19466 | 500 |
| | | | | 19467 | 500 |
| | | | | 19468 | 500 |
| | | | | 19469 | 500 |
| | | | | 19470 | 500 |
| | | | | 19471 | 500 |
| | | | | 19472 | 500 |
| | | | | 19473 | 500 |
| | | | | 19474 | 500 |
| | | | | 19475 | 500 |
| | | | | 19476 | 500 |
| | | | | 19477 | 500 |
| | | | | 19478 | 500 |
| | | | | 19479 | 500 |
| | | | | 19480 | 500 |
| | | | | 19481 | 500 |
| | | | | 19482 | 500 |
| | | | | 19483 | 500 |
| | | | | 19484 | 500 |
| | | | | 19485 | 500 |
| | | | | 19486 | 500 |
| | | | | 19487 | 500 |
| | | | | 19488 | 500 |
| | | | | 19489 | 500 |
| | | | | 19490 | 500 |
| | | | | 19491 | 500 |
| | | | | 19492 | 500 |
| | | | | 19493 | 500 |
| | | | | 19494 | 500 |
| | | | | 19495 | 500 |
| | | | | 19496 | 500 |
| | | | | 19497 | 500 |
| | | | | 19498 | 500 |
| | | | | 19499 | 500 |
| | | | | 19500 | 500 |
| | | | | 19501 | 500 |
| | | | | 19502 | 500 |
| | | | | 19503 | 500 |
| | | | | 19504 | 500 |
| | | | | 19505 | 500 |
| | | | | 19506 | 500 |
| | | | | 19507 | 500 |
| | | | | 19508 | 500 |
| | | | | 19509 | 500 |
| | | | | 19510 | 500 |
| | | | | 19511 | 500 |
| | | | | 19512 | 500 |
| | | | | 19513 | 500 |
| | | | | 19514 | 500 |
| | | | | 19515 | 500 |
| | | | | 19516 | 500 |
| | | | | 19517 | 500 |
| | | | | 19518 | 500 |
| | | | | 19519 | 500 |
| | | | | 19520 | 500 |
| | | | | 19521 | 500 |
| | | | | 19522 | 500 |
| | | | | 19523 | 500 |
| | | | | 19524 | 500 |
| | | | | 19525 | 500 |
| | | | | 19526 | 500 |
| | | | | 19527 | 500 |
| | | | | 19528 | 500 |
| | | | | 19529 | 500 |
| | | | | 19530 | 500 |
| | | | | 19531 | 500 |
| | | | | 19532 | 500 |
| | | | | 19533 | 500 |
| | | | | 19534 | 500 |
| | | | | 19535 | 500 |
| | | | | 19536 | 500 |
| | | | | 19537 | 500 |
| | | | | 19538 | 500 |
| | | | | 19539 | 500 |
| | | | | 19540 | 500 |
| | | | | 19541 | 500 |
| | | | | 19542 | 500 |
| | | | | 19543 | 500 |
| | | | | 19544 | 500 |
| | | | | 19545 | 500 |
| | | | | 19546 | 500 |
| | | | | 19547 | 500 |
| | | | | 19548 | 500 |
| | | | | 19549 | 500 |
| | | | | 19550 | 500 |
| | | | | 19551 | 500 |
| | | | | 19552 | 500 |
| | | | | 19553 | 500 |
| | | | | 19554 | 500 |
| | | | | 19555 | 500 |
| | | | | 19556 | 500 |
| | | | | 19557 | 500 |
| | | | | 19558 | 500 |
| | | | | 19559 | 500 |
| | | | | 19560 | 500 |
| | | | | 19561 | 500 |
| | | | | 19562 | 500 |
| | | | | 19563 | 500 |
| | | | | 19564 | 500 |
| | | | | 19565 | 500 |
| | | | | 19566 | 500 |
| | | | | 19567 | 500 |
| | | | | 19568 | 500 |
| | | | | 19569 | 500 |
| | | | | 19570 | 500 |
| | | | | 19571 | 500 |
| | | | | 19572 | 500 |
| | | | | 19573 | 500 |
| | | | | 19574 | 500 |
| | | | | 19575 | 500 |
| | | | | 19576 | 500 |
| | | | | 19577 | 500 |
| | | | | 19578 | 500 |
| | | | | 19579 | 500 |
| | | | | 19580 | 500 |
| | | | | 19581 | 500 |
| | | | | 19582 | 500 |
| | | | | 19583 | 500 |
| | | | | 19584 | 500 |
| | | | | 19585 | 500 |
| | | | | 19586 | 500 |
| | | | | 19587 | 500 |
| | | | | 19588 | 500 |
| | | | | 19589 | 500 |
| | | | | 19590 | 500 |
| | | | | 19591 | 500 |
| | | | | 19592 | 500 |
| | | | | 19593 | 500 |
| | | | | 19594 | 500 |
| | | | | 19595 | 500 |
| | | | | 19596 | 500 |
| | | | | 19597 | 500 |
| | | | | 19598 | 500 |
| | | | | 19599 | 500 |
| | | | | 19600 | 500 |
| | | | | 19601 | 500 |
| | | | | 19602 | 500 |
| | | | | 19603 | 500 |
| | | | | 19604 | 500 |
| | | | | 19605 | 500 |
| | | | | 19606 | 500 |
| | | | | 19607 | 500 |
| | | | | 19608 | 500 |
| | | | | 19609 | 500 |
| | | | | 19610 | 500 |
| | | | | 19611 | 500 |
| | | | | 19612 | 500 |
| | | | | 19613 | 500 |
| | | | | 19614 | 500 |
| | | | | 19615 | 500 |
| | | | | 19616 | 500 |
| | | | | 19617 | 500 |
| | | | | 19618 | 500 |
| | | | | 19619 | 500 |
| | | | | 19620 | 500 |
| | | | | 19621 | 500 |
| | | | | 19622 | 500 |
| | | | | 19623 | 500 |
| | | | | 19624 | 500 |
| | | | | 19625 | 500 |
| | | | | 19626 | 500 |
| | | | | 19627 | 500 |
| | | | | 19628 | 500 |
| | | | | 19629 | 500 |
| | | | | 19630 | 500 |
| | | | | 19631 | 500 |
| | | | | 19632 | 500 |
| | | | | 19633 | 500 |
| | | | | 19634 | 500 |
| | | | | 19635 | 500 |
| | | | | 19636 | 500 |
| | | | | 19637 | 500 |
| | | | | 19638 | 500 |
| | | | | 19639 | 500 |
| | | | | 19640 | 500 |
| | | | | 19641 | 500 |
| | | | | 19642 | 500 |
| | | | | 19643 | 500 |
| | | | | 19644 | 500 |
| | | | | 19645 | 500 |
| | | | | 19646 | 500 |
| | | | | 19647 | 500 |
| | | | | 19648 | 500 |
| | | | | 19649 | 500 |
| | | | | 19650 | 500 |
| | | | | 19651 | 500 |
| | | | | 19652 | 500 |
| | | | | 19653 | 500 |
| | | | | 19654 | 500 |
| | | | | 19655 | 500 |
| | | | | 19656 | 500 |
| | | | | 19657 | 500 |
| | | | | 19658 | 500 |
| | | | | 19659 | 500 |
| | | | | 19660 | 500 |
| | | | | 19661 | 500 |
| | | | | 19662 | 500 |
| | | | | 19663 | 500 |
| | | | | 19664 | 500 |
| | | | | 19665 | 500 |
| | | | | 19666 | 500 |
| | | | | 19667 | 500 |
| | | | | 19668 | 500 |
| | | | | 19669 | 500 |
| | | | | 19670 | 500 |
| | | | | 19671 | 500 |
| | | | | 19672 | 500 |
| | | | | 19673 | 500 |
| | | | | 19674 | 500 |
| | | | | 19675 | 500 |
| | | | | 19676 | 500 |
| | | | | 19677 | 500 |
| | | | | 19678 | 500 |
| | | | | 19679 | 500 |
| | | | | 19680 | 500 |
| | | | | 19681 | 500 |
| | | | | 19682 | 500 |
| | | | | 19683 | 500 |
| | | | | 19684 | 500 |
| | | | | 19685 | 500 |
| | | | | 19686 | 500 |
| | | | | 19687 | 500 |
| | | | | 19688 | 500 |
| | | | | 19689 | 500 |
| | | | | 19690 | 500 |
| | | | | 19691 | 500 |
| | | | | 19692 | 500 |
| | | | | 19693 | 500 |
| | | | | 19694 | 500 |
| | | | | 19695 | 500 |
| | | | | 19696 | 500 |
| | | | | 19697 | 500 |
| | | | | 19698 | 500 |
| | | | | 19699 | 500 |
| | | | | 19700 | 500 |
| | | | | 19701 | 500 |
| | | | | 19702 | 500 |
| | | | | 19703 | 500 |
| | | | | 19704 | 500 |
| | | | | 19705 | 500 |
| | | | | 19706 | 500 |
| | | | | 19707 | 500 |
| | | | | 19708 | 500 |
| | | | | 19709 | 500 |
| | | | | 19710 | 500 |
| | | | | 19711 | 500 |
| | | | | 19712 | 500 |
| | | | | 19713 | 500 |
| | | | | 19714 | 500 |
| | | | | 19715 | 500 |
| | | | | 19716 | 500 |
| | | | | 19717 | 500 |
| | | | | 19718 | 500 |
| | | | | 19719 | 500 |
| | | | | 19720 | 500 |
| | | | | 19721 | 500 |
| | | | | 19722 | 500 |
| | | | | 19723 | 500 |
| | | | | 19724 | 500 |
| | | | | 19725 | 500 |
| | | | | 19726 | 500 |
| | | | | 19727 | 500 |
| | | | | 19728 | 500 |
| | | | | 19729 | 500 |
| | | | | 19730 | 500 |
| | | | | 19731 | 500 |
| | | | | 19732 | 500 |
| | | | | 19733 | 500 |
| | | | | 19734 | 500 |
| | | | | 19735 | 500 |
| | | | | 19736 | 500 |
| | | | | 19737 | 500 |
| | | | | 19738 | 500 |
| | | | | 19739 | 500 |
| | | | | 19740 | 500 |
| | | | | 19741 | 500 |
| | | | | 19742 | 500 |
| | | | | 19743 | 500 |
| | | | | 19744 | 500 |
| | | | | 19745 | 500 |
| | | | | 19746 | 500 |
| | | | | 19747 | 500 |
| | | | | 19748 | 500 |
| | | | | 19749 | 500 |
| | | | | 19750 | 500 |
| | | | | 19751 | 500 |
| | | | | 19752 | 500 |
| | | | | 19753 | 500 |
| | | | | 19754 | 500 |
| | | | | 19755 | 500 |
| | | | | 19756 | 500 |
| | | | | 19757 | 500 |
| | | | | 19758 | 500 |
| | | | | 19759 | 500 |
| | | | | 19760 | 500 |
| | | | | 19761 | 500 |
| | | | | 19762 | 500 |
| | | | | 19763 | 500 |
| | | | | 19764 | 500 |
| | | | | 19765 | 500 |
| | | | | 19766 | 500 |
| | | | | 19767 | 500 |
| | | | | 19768 | 500 |
| | | | | 19769 | 500 |
| | | | | 19770 | 500 |
| | | | | 19771 | 500 |
| | | | | 19772 | 500 |
| | | | | 19773 | 500 |
| | | | | 19774 | 500 |
| | | | | 19775 | 500 |
| | | | | 19776 | 500 |
| | | | | 19777 | 500 |
| | | | | 19778 | 500 |
| | | | | 19779 | 500 |
| | | | | 19780 | 500 |
| | | | | 19781 | 500 |
| | | | | 19782 | 500 |
| | | | | 19783 | 500 |
| | | | | 19784 | 500 |
| | | | | 19785 | 500 |
| | | | | 19786 | 500 |
| | | | | 19787 | 500 |
| | | | | 19788 | 500 |
| | | | | 19789 | 500 |
| | | | | 19790 | 500 |
| | | | | 19791 | 500 |
| | | | | 19792 | 500 |
| | | | | 19793 | 500 |
| | | | | 19794 | 500 |
| | | | | 19795 | 500 |
| | | | | 19796 | 500 |
| | | | | 19797 | 500 |
| | | | | 19798 | 500 |
| | | | | 19799 | 500 |
| | | | | 19800 | 500 |
| | | | | 19801 | 500 |
| | | | | 19802 | 500 |
| | | | | 19803 | 500 |
| | | | | 19804 | 500 |
| | | | | 19805 | 500 |
| | | | | 19806 | 500 |
| | | | | 19807 | 500 |
| | | | | 19808 | 500 |
| | | | | 19809 | 500 |
| | | | | 19810 | 500 |
| | | | | 19811 | 500 |
| | | | | 19812 | 1000 |
| | | | | 19813 | 500 |
| | | | | 19814 | 500 |
| | | | | 19815 | 500 |
| | | | | 19816 | 500 |
| | | | | 19817 | 500 |
| | | | | 19818 | 500 |
| | | | | 19819 | 500 |
| | | | | 19820 | 500 |
| | | | | 19821 | 500 |
| | | | | 19822 | 500 |
| | | | | 19823 | 500 |
| | | | | 19824 | 500 |
| | | | | 19825 | 500 |
| | | | | 19826 | 500 |
| | | | | 19827 | 500 |
| | | | | 19828 | 500 |
| | | | | 19829 | 500 |
| | | | | 19830 | 500 |
| | | | | 19831 | 500 |
| | | | | 19832 | 500 |
| | | | | 19833 | 500 |
| | | | | 19834 | 500 |
| | | | | 19835 | 500 |
| | | | | 19836 | 500 |
| | | | | 19837 | 500 |
| | | | | 19838 | 500 |
| | | | | 19839 | 500 |
| | | | | 19840 | 500 |
| | | | | 19841 | 500 |
| | | | | 19842 | 500 |
| | | | | 19843 | 500 |
| | | | | 19844 | 500 |
| | | | | 19845 | 500 |
| | | | | 19846 | 500 |
| | | | | 19847 | 500 |
| | | | | 19848 | 500 |
| | | | | 19849 | 500 |
| | | | | 19850 | 500 |
| | | | | 19851 | 500 |
| | | | | 19852 | 500 |
| | | | | 19853 | 500 |
| | | | | 19854 | 500 |
| | | | | 19855 | 500 |
| | | | | 19856 | 500 |
| | | | | 19857 | 500 |
| | | | | 19858 | 500 |
| | | | | 19859 | 500 |
| | | | | 19860 | 500 |
| | | | | 19861 | 500 |
| | | | | 19862 | 500 |
| | | | | 19863 | 500 |
| | | | | 19864 | 500 |
| | | | | 19865 | 500 |
| | | | | 19866 | 500 |
| | | | | 19867 | 500 |
| | | | | 19868 | 500 |
| | | | | 19869 | 500 |
| | | | | 19870 | 500 |
| | | | | 19871 | 500 |
| | | | | 19872 | 500 |
| | | | | 19873 | 500 |
| | | | | 19874 | 500 |
| | | | | 19875 | 500 |
| | | | | 19876 | 500 |
| | | | | 19877 | 500 |
| | | | | 19878 | 500 |
| | | | | 19879 | 500 |
| | | | | 19880 | 500 |
| | | | | 19881 | 500 |
| | | | | 19882 | 500 |
| | | | | 19883 | 500 |
| | | | | 19884 | 500 |
| | | | | 19885 | 500 |
| | | | | 19886 | 500 |
| | | | | 19887 | 500 |
| | | | | 19888 | 500 |
| | | | | 19889 | 500 |
| | | | | 19890 | 500 |
| | | | | 19891 | 500 |
| | | | | 19892 | 500 |
| | | | | 19893 | 500 |
| | | | | 19894 | 500 |
| | | | | 19895 | 500 |
| | | | | 19896 | 500 |
| | | | | 19897 | 500 |
| | | | | 19898 | 500 |
| | | | | 19899 | 500 |
| | | | | 19900 | 500 |
| | | | | 19901 | 500 |
| | | | | 19902 | 500 |
| | | | | 19903 | 500 |
| | | | | 19904 | 500 |
| | | | | 19905 | 500 |
| | | | | 19906 | 500 |
| | | | | 19907 | 500 |
| | | | | 19908 | 500 |
| | | | | 19909 | 500 |
| | | | | 19910 | 500 |
| | | | | 19911 | 500 |
| | | | | 19912 | 500 |
| | | | | 19913 | 500 |
| | | | | 19914 | 500 |
| | | | | 19915 | 500 |
| | | | | 19916 | 500 |
| | | | | 19917 | 500 |
| | | | | 19918 | 500 |
| | | | | 19919 | 500 |
| | | | | 19920 | 500 |
| | | | | 19921 | 1000 |
| | | | | 19922 | 500 |
| | | | | 19923 | 500 |
| | | | | 19924 | 500 |
| | | | | 19925 | 500 |
| | | | | 19926 | 500 |
| | | | | 19927 | 500 |
| | | | | 19928 | 500 |
| | | | | 19929 | 500 |
| | | | | 19930 | 500 |
| | | | | 19931 | 500 |
| | | | | 19932 | 500 |
| | | | | 19933 | 500 |
| | | | | 19934 | 500 |
| | | | | 19935 | 500 |
| | | | | 19936 | 500 |
| | | | | 19937 | 500 |
| | | | | 19938 | 500 |
| | | | | 19939 | 500 |
| | | | | 19940 | 500 |
| | | | | 19941 | 500 |
| | | | | 19942 | 500 |
| | | | | 19943 | 500 |
| | | | | 19944 | 500 |
| | | | | 19945 | 500 |
| | | | | 19946 | 500 |
| | | | | 19947 | 500 |
| | | | | 19948 | 500 |
| | | | | 19949 | 500 |
| | | | | 19950 | 500 |
| | | | | 19951 | 500 |
| | | | | 19952 | 500 |
| | | | | 19953 | 500 |
| | | | | 19954 | 500 |
| | | | | 19955 | 500 |
| | | | | 19956 | 500 |
| | | | | 19957 | 500 |
| | | | | 19958 | 500 |
| | | | | 19959 | 500 |
| | | | | 19960 | 500 |
| | | | | 19961 | 500 |
| | | | | 19962 | 500 |
| | | | | 19963 | 500 |
| | | | | 19964 | 500 |
| | | | | 19965 | 500 |
| | | | | 19966 | 500 |
| | | | | 19967 | 500 |
| | | | | 19968 | 500 |
| | | | | 19969 | 500 |
| | | | | 19970 | 500 |
| | | | | 19971 | 500 |
| | | | | 19972 | 500 |
| | | | | 19973 | 500 |
| | | | | 19974 | 500 |
| | | | | 19975 | 500 |
| | | | | 19976 | 500 |
| | | | | 19977 | 500 |
| | | | | 19978 | 500 |
| | | | | 19979 | 500 |
| | | | | 19980 | 500 |
| | | | | 19981 | 500 |
| | | | | 19982 | 500 |
| | | | | 19983 | 500 |
| | | | | 19984 | 500 |
| | | | | 19985 | 500 |
| | | | | 19986 | 500 |
| | | | | 19987 | 500 |
| | | | | 19988 | 500 |
| | | | | 19989 | 500 |
| | | | | 19990 | 500 |
| | | | | 19991 | 500 |
| | | | | 19992 | 500 |
| | | | | 19993 | 500 |
| | | | | 19994 | 500 |
| | | | | 19995 | 500 |
| | | | | 19996 | 500 |
| | | | | 19997 | 500 |
| | | | | 19998 | 500 |
| | | | | 19999 | 500 |
| | | | | 20000 | 500 |
| | | | | 20001 | 500 |
| | | | | 20002 | 500 |
| | | | | 20003 | 500 |
| | | | | 20004 | 500 |
| | | | | 20005 | 500 |
| | | | | 20006 | 500 |
| | | | | 20007 | 500 |
| | | | | 20008 | 500 |
| | | | | 20009 | 500 |
| | | | | 20010 | 500 |
| | | | | 20011 | 500 |
| | | | | 20012 | 500 |
| | | | | 20013 | 500 |
| | | | | 20014 | 500 |
| | | | | 20015 | 500 |
| | | | | 20016 | 500 |
| | | | | 20017 | 500 |
| | | | | 20018 | 500 |
| | | | | 20019 | 500 |
| | | | | 20020 | 500 |
| | | | | 20021 | 500 |
| | | | | 20022 | 500 |
| | | | | 20023 | 500 |
| | | | | 20024 | 500 |
| | | | | 20025 | 500 |
| | | | | 20026 | 500 |
| | | | | 20027 | 500 |
| | | | | 20028 | 500 |
| | | | | 20029 | 500 |
| | | | | 20030 | 500 |
| | | | | 20031 | 500 |
| | | | | 20032 | 500 |
| | | | | 20033 | 500 |
| | | | | 20034 | 500 |
| | | | | 20035 | 500 |
| | | | | 20036 | 500 |
| | | | | 20037 | 500 |
| | | | | 20038 | 500 |
| | | | | 20039 | 500 |
| | | | | 20040 | 500 |
| | | | | 20041 | 500 |
| | | | | 20042 | 500 |
| | | | | 20043 | 500 |
| | | | | 20044 | 500 |
| | | | | 20045 | 500 |
| | | | | 20046 | 500 |
| | | | | 20047 | 500 |
| | | | | 20048 | 500 |
| | | | | 20049 | 500 |
| | | | | 20050 | 500 |
| | | | | 20051 | 1000 |
| | | | | 20052 | 500 |
| | | | | 20053 | 500 |
| | | | | 20054 | 500 |
| | | | | 20055 | 500 |
| | | | | 20056 | 500 |
| | | | | 20057 | 500 |
| | | | | 20058 | 500 |
| | | | | 20059 | 500 |
| | | | | 20060 | 500 |
| | | | | 20061 | 500 |
| | | | | 20062 | 500 |
| | | | | 20063 | 500 |
| | | | | 20064 | 500 |
| | | | | 20065 | 500 |
| | | | | 20066 | 500 |
| | | | | 20067 | 500 |
| | | | | 20068 | 500 |
| | | | | 20069 | 500 |
| | | | | 20070 | 500 |
| | | | | 20071 | 500 |
| | | | | 20072 | 500 |
| | | | | 20073 | 500 |
| | | | | 20074 | 500 |
| | | | | 20075 | 500 |
| | | | | 20076 | 500 |
| | | | | 20077 | 500 |
| | | | | 20078 | 500 |
| | | | | 20079 | 500 |
| | | | | 20080 | 500 |
| | | | | 20081 | 500 |
| | | | | 20082 | 500 |
| | | | | 20083 | 500 |
| | | | | 20084 | 500 |
| | | | | 20085 | 500 |
| | | | | 20086 | 500 |
| | | | | 20087 | 500 |
| | | | | 20088 | 500 |
| | | | | 20089 | 500 |
| | | | | 20090 | 500 |
| | | | | 20091 | 500 |
| | | | | 20092 | 500 |
| | | | | 20093 | 500 |
| | | | | 20094 | 500 |
| | | | | 20095 | 500 |
| | | | | 20096 | 500 |
| | | | | 20097 | 500 |
| | | | | 20098 | 

LA VOZ DE CUBA.

HABANA 6 DE MARZO DE 1878.

## LO PASADO Y LO VENIDERO.

Nos lamentábamos ayer de la imprevision y apatía de que generalmente adolecemos, y deciamos que de hoy más nuestro deber es correjirnos radicalmente de este defecto, dadas las reformas que vá á sufrir nuestra manera de ser. En efecto, vamos á tener representacion en las Córtes, así como Ayuntamientos populares, lo mismo que las demás provincias de la monarquía. Es decir, que, como las demás provincias tambien, vamos á tener elecciones, y por consiguiente, partidos. En una palabra: vamos á entrar de lleno en la vida política.

No calificamos el hecho: no hacemos más que apuntarlo. No lo calificamos, porque en el terreno de los hechos nuestra calificacion seria de poca importancia, y en el terreno de las ideas, bien conocidas son las que profesa LA VOZ DE CUBA. Nosotros no somos de esa clase de políticos-veletas, que varían de modo de pensar segun el viento que sopla. Ni somos tampoco de los que reniegan con desdeñosa afectacion de todo lo pasado, y se postran en perpétua adoracion ante el desconocido porvenir. Sabemos que la sociedad, como el individuo, siente á menudo necesidades que es preciso satisfacer; pero sabemos tambien que la vida de la sociedad, como la del individuo, es *una*, y que en ella no puede haber solucion de continuidad, porque en la vida la solucion de continuidad es la muerte. De manera que cada nueva faz que en esa vida se presenta, no es más que una continuacion de las anteriores, y se halla íntimamente ligada con ellas y en ellas se apoya. Por lo tanto, áun cuando su direccion sea algo diferente, no puede serle jamás diametralmente opuesta.

No maldecimos de lo pasado, porque para nosotros es en extremo respetable. A nuestros ojos, nada hay más digno de respeto que nuestros padres, y nuestros padres representan para nosotros lo pasado. Lo pasado es la historia, y la historia es la pátria. Y ¿hay algo más respetable y digno de amor que la pátria?

Además, lo pasado sabemos ya lo que ha dado de sí, y ni de lo presente ni de lo venidero sabemos nada todavía. Lo pasado nos ha legado una historia llena de gloria: en lo pasado fué España la primera nacion del orbe: todos los tesoros de nuestra literatura y de nuestras artes, que el mundo vé con asombro y con envidia, obra son de lo pasado. Nuestros antepasados encontraron la isla de Cuba hecha una inculta madriguera de infelices indios, y la convirtieron en el país más rico y próspero del mundo. Ningun español que ame de corazon á su pátria, deja de desear que España vuelva á ser, en el porvenir, la nacion gloriosa y preponderante que fué en lo pasado. ¿Qué tiene, pues, de particular que nosotros, en vez de maldecir de lo pasado, lo veamos, no solo con respeto, sino hasta con cariño, como mira á su padre el que recibe de él un nombre glorioso y una pingüe herencia?

Que en lo pasado hubo defectos: convenido. ¿No los hay ahora? ¿no los habrá en el porvenir? Y es de advertir que los defectos de lo pasado no impidieron á España ser la primera nacion del mundo; posicion gloriosa que no sabemos si le permitirán volver á ocupar los defectos del presente y del porvenir.

No decimos esto porque seamos ciegos *laudatores temporis acta*, fanáticos admiradores de todo lo antiguo. Pero si seria una gran necedad asegurar que todo lo pasado fué bueno, ¿no es el mayor de los absurdos decir que todo fué malo? Y no solo es absurdo ese incomprensible clamor contra todo lo pasado: es más: es una iniquidad; es la más negra ingratitud. ¿Tenemos acaso un solo rasgo noble en nuestro carácter y en nuestra fisonomía que no lo hayamos heredado de nuestros padres? ¿Poseemos alguna máxima de buena moral que no nos la hayan inculcado ellos?

Para reconocer que hay cosas que deben mejorarse, no se necesita declamar contra todo lo pasado. Introdúzcanse enhorabuena todas las mejoras que se quiera. Si son mejoras morales, por fuerza tendrán que estar basadas en los principios de moral que nuestros padres nos enseñaron; y si son mejoras materiales, tendrán por necesidad que ser desarrollos y aplicaciones de las ciencias cuyos principios nos legaron ellos tambien.

Otra razon poderosísima tenemos todavía para ver con respeto y con cariño lo pasado: tenemos el ejemplo de lo que ha sucedido y está sucediendo en otros pueblos que, en momentos de insensatez y frenesí, quisieron romper absolutamente con lo pasado y fraguarse en todo nuevos senderos para el porvenir. Ahí están, en el vecino continente, esos desdichados paises que formaron en un tiempo parte de la vasta monarquía española. En el paroxismo de la fiebre revolucionaria, ellos hicieron, en cuanto les fué posible, tabla rasa de todo lo pasado, y desde entónces empezó á caer sobre ellos la série de desventuras que, con una sola excepcion, desde entónces los agobia; siendo muy de notar que esos males han aumentado ó han disminuido, segun que ellos se han separado más ó ménos de lo pasado. Y miéntras que desde los albores mismos de su revolucion empezaba para esos infortunados paises esa série lamentable de desastres que ha reducido á la mayor parte de ellos al estado lastimoso en que hoy los vemos, la isla de Cuba, marchando por sus caminos tradicionales, llegaba rápidamente á un grado de prosperidad y desarrollo de que apénas ofrece otro ejemplo la historia.

Esto ha sido para nosotros lo pasado, y por lo tanto, lo repetimos, nada de extraño tiene que lo veamos con el respeto y cariño con que vemos á nuestros padres, á quienes debemos nuestro sér y la posicion social de que gozamos. Lo extraño es que haya insensatos que no sientan este respeto y este cariño, y que crean que hacen una gran cosa cuando maldicen de todo lo que constituye nuestra gloriosa historia.

En cuanto al porvenir, esperemos que será feliz, y sobre todo, hagamos por nuestra parte cuanto nos sea posible para lograrlo. Porque es preciso tener presente que el porvenir está en manos de todos. Así como lo pasado fué la obra de nuestros primogenitores, lo venidero será la obra nuestra y de nuestros hijos. Si todos cumplimos con nuestro deber, no solo evitaremos los males acerbos que aquejan á otros pueblos, sino que nuestra amada España se elevará de nuevo á la mayor altura, y podrá ser otro vez la admiracion y la envidia de las naciones.

Y ahora, descendiendo de estos puntos de vista generales, y concretándonos al hecho actual, el cumplimiento de ese deber de que hace un momento hablábamos, nos obliga á contemplarlo tal cual es y á llenar fielmente las obligaciones que nos impone. Ya lo hemos dicho: vamos á tener elecciones, y por lo mismo partidos, al igual de las demás provincias de la monarquía. Estos partidos serán por lo ménos dos: uno conservador y otro avanzado. Y como, segun el principio democrático que hoy prevalece, los votos no se *pesan* sino que se *cuentan*, el partido que reuna más votos en las urnas, ese será el que triunfe.

No sabemos cuál será el censo que se fije para ser elector, pero sea el que fuere, desde luego estamos seguros de que los hombres de ideas avanzadas acudirán todos á la lucha electoral. Esto es preciso que lo tengan muy presente los hombres de órden para que por su parte pongan tambien todo lo necesario para no ser vencidos.

Esta lucha es inevitable: es la condicion indispensable, la esencia misma del sistema representativo. Por mucho que pugne con las que han sido hasta ahora nuestras costumbres, preciso es aceptarla como se aceptan las necesidades ineludibles, como se acepta el frio en el invierno y el calor en el verano. Es la principal funcion orgánica de la vida política en que vamos á entrar, y preciso es desempeñarla.

Una vez establecidas en un país las instituciones representativas, es un deber sagrado é imprescindible de los hombres de bien el acudir á las luchas electorales que esas instituciones imponen. De las urnas han de salir nuestros representantes en las Córtes del reino, así como los Ayuntamientos que han de rejir nuestros municipios; y como es deber de todo hombre de bien el hacer cuanto en su mano esté para que el país en que vive esté bien gobernado y representado, y como el modo más eficaz de llenar este deber es acudir á las urnas para que salgan de ellas hombres dignos, probos, inteligentes, en una palabra, idóneos, para los cargos que van á desempeñar, de aquí la obligacion de no faltar á las elecciones. Y es de advertir que debiendo de todos modos salir de las urnas los representantes de la provincia, así como los individuos que han de formar los Ayuntamientos; como los hombres ménos á propósito para hacer una buena eleccion han de acudir de todos modos á depositar sus votos, ellos serán los que triunfen si los hombres de bien se abstienen de depositar los suyos. Lo que en tal caso vendria á ser nuestra representacion en las Córtes, así como los ayuntamientos populares que se elejirian, fácil es comprenderlo. Y ¿quién tendria la culpa de ello más que los que, pudiendo hacer una buena eleccion con solo acudir á depositar sus votos, se abstuvieran de hacerlo?

Levantamos aquí la pluma, aplazando para otra ocasion el insistir sobre el mismo tema, presentando las ampliaciones convenientes. Nuestro actual propósito no es otro que el llamar la atencion de los hombres de órden de esta isla, para que, familiarizándose desde ahora con los deberes que les imponen las nuevas instituciones que pronto han de rejirnos, no suceda que al llegar el dia en que tengan que llenar esos deberes, se encuentren sorprendidos y sin saber qué hacerse por no tener de ellos idea alguna.—*R.*

## Telegrama importante.

De la Capitanía General se nos ha remitido el siguiente:

El Excmo. Sr. Comandante General de la Trecha desde Sancti-Spiritus en telegrama de ayer, dice al Excmo. Sr. Capitan General lo que sigue:

«El coronel Ochando, desde Manacas, en telegrama de hoy me dice: — Desde el 28 de febrero hasta el 5 de marzo ambos inclusive, se han presentado en el campamento de Ojo de Agua 520 hombres con 18 armas, 68 mujeres y 31 niños pertenecientes á las fuerzas de Sancti-Spiritus y Trocha: en campamento de Ciego Potrero 492 hombres con 162 armas, 87 mujeres y 30 niños, de las fuerzas de Remedios y Trocha: total 1,112 hombres, 155 mujeres y 61 niños.

Mañana terminará entrega de armas de fuerzas Carrillo y pasarán Roloff y él con sus escoltas al campamento del Cangrejo, donde se concentrarán las fuerzas de Maestre. Lo que traslado á V. E. para su conocimiento y en cumplimiento de mi deber.»

Lo que de órden de V. E. se comunica á V. para que se sirva publicarlo en el diario de su digno cargo.

Habana 6 de marzo de 1878.—El brigadier jefe de E. M.—*Pedro de Cuenca.*

## Felicitaciones.

La *Gaceta* de hoy continúa insertando las siguientes felicitaciones que han recibido los generales Jovellar y Martinez Campos, con motivo de la pacificacion de esta isla:

*Madrid 3 de marzo de 1878.*

Presidente Consejo de Ministros al Gobernador General de Cuba y General en Jefe del Ejército en operaciones.

**Habana.**

El Senado en sesion de ayer ha acordado por unanimidad felicitar sin dilacion al ilustre General en Jefe del Ejército de la Isla de Cuba, al digno Gobernador General, á todos los Generales, Jefes, Oficiales y soldados de aquel Ejército de mar y tierra y á los voluntarios de la Isla por la pericia y el valor incansable que han demostrado hasta poner término á la guerra: y tengo la honra de trasmitir á SS. EE. esta manifestacion que prueba la alta estima en que el Senado tiene los servicios de cuantos han contribuido á mantener la integridad de la pátria.

*Cádiz, 4 de marzo de 1878.*

Al Capitan General.

**Habana.**

Municipio Cádiz me suplica felicite Campos y Jovellar por conclusion guerra, deseando sea este puerto el de regreso. Ofrecida cariñosa acogida.—*Viesca.*

*Colon 4 de marzo de 1878.*

Al Excmo Sr. Gobernador General.

**Habana.**

La Directiva de este Casino Español en nombre de sus asociados tiene el honor de felicitar calurosamente á V. E. y al Excmo. Sr. General en Jefe D. Arsenio Martinez de Campos por la paz en el territorio de esta Antilla.—El presidente, Lorenzo Lopez.—P. O.—*Julian Cabello.*

*Remedios 5 de marzo de 1878.*

Al Excmo. Sr. Gobernador General.

**Habana.**

La Junta Directiva del Casino Español felicita á V. E. y por su conducto al General en Jefe D. Arsenio Martinez Campos por terminacion de la guerra en Cuba de una manera, que honrosa para la Nacion, hace esperar al país una era de bienestar y progreso.—El presidente, *Manuel M. Mujica.*

*Trinidad 5 de marzo 1878.*

Al Excmo. Gobernador General.

**Habana.**

El Casino Español de Trinidad respetuosamente saluda á V. E. y al Excmo. Sr. General en Jefe.

Cuando tras tantos sacrificios y sinsabores debidos á una guerra destructora, se sorprende con el hecho de la paz, queda embargado el ánimo de alegría y entusiasmo por el inmenso bien que el mismo hecho entraña. Este Casino felicita á los ilustres patricios que con su política y muchos esfuerzos han logrado esa paz por la que tanto anhelábamos.—El presidente, *Antonio Font.*

## Carta del corresponsal de la prensa cerca del Cuartel General.

*Puerto-Príncipe 2 de marzo de 1878.*

Mi querido director: La animacion que reina en esta ciudad, excede á toda ponderacion. Desde las primeras horas del dia 28 circula por las calles gran número de personas, y desde la noche de aquel dia, grupos numerosos de individuos de las fuerzas antes insurrectas, recorren las calles en medio del mayor órden, parándose delante de los edificios públicos y muchos particulares que están vistosamente iluminados. En todos ellos hay letreros que dicen: «¡Viva la paz, viva la union, vivan los generales Campos, Jovellar y Cassola.!»

En los alrededores del cuartel de la Vigía, donde como dije en mi anterior, están alojadas las fuerzas recien entradas, no se puede dar un paso. Allí tienen lugar escenas tiernísimas que hacen derramar abundantes lágrimas á los que las presencian.

Ya es la madre, que despues de nueve años de no ver á su hijo, tiene necesidad de que le indique su presencia: ya la esposa cariñosa rodeada de sus hijos que busca al esposo; ya el padre sexajenario.

Lágrimas de felicidad, de dicha, de contento, derraman todos... todos, ménos los que buscan en valde á un sér querido: los que en vez de las tiernas caricias hallan la confirmacion de la muerte de aquel.

Esas son las únicas lágrimas de pesar, de dolor inmenso.

Todos á una exclaman: ¡Maldita sea la guerra, orijen de tantas penas! ¡Viva la paz, comienzo de tantas dichas!

Los cafés y las tiendas; las fondas y las casas particulares, están llenas de gente. Todos tienen ahijados.

El jefe y el oficial que durante ese largo tiempo defendió nuestra bandera, departe amigablemente con los que hasta ayer fueron nuestros enemigos, y todos recuerdan las acciones en que se han hallado, unos enfrente de otros.

El baile del Casino estuvo concurridísimo, y en aquel salon era difícil dar un paso. La satisfaccion embargaba los corazones, y hasta una hora avanzada nadie se movió de allí.

El recuerdo de estos dias reina en la memoria de todos y es seguramente un excelente prólogo para la nueva era en que vá á entrar la isla de Cuba.

Quisiera dar una relacion exacta de los jefes y oficiales del campo insurrecto que el 28 entraron en Puerto-Príncipe, pero como esto es muy difícil, he de contentarme con los siguientes, que la memoria me apunta:

Señores que componian la Cámara:

D. Miguel Betancourt Guerra.
D. Francisco Sanchez Betancourt.
D. Antonio Aguilar.
D. José Aurelio Perez.
D. Luis Victoriano Betancourt.
D. Federico Betancourt.
D. Juan Spotorno.
D. Marcos Garcia.
D. Salvador Cisneros, Marqués de Santa Lucía. (Se embarca para Europa.)
Mayor General D. Máximo Gomez. (Embarcado para Jamaica.)
Brigadieres:
D. Gregorio Benitez. (Se embarcó para Jamaica.)
D. Rafael Rodriguez. (Idem idem.)
D. Gabriel Gonzalez. (Idem para los Estados-Unidos.)
D. Manuel Suarez.
Coroneles:
D. Enrique Mola y Borza.
D. Emilio Luaces. (Sanidad.)
D. Gonzalo Moreno.
Tenientes coroneles:
D. Ramon Roa.
D. Manuel Lechuga.
D. Rafael Rodriguez.
D. Salvador Rosado.
D. Domingo Ramos.
D. Andres Diaz.
D. Tomás Johnson.
D. Aurelio Estrada.
D. N. Capote.
D. Julio Diaz.

Entre los comandantes y otros oficiales recuerdo á los siguientes:

D. Manuel Rodriguez.
D. Enrique Collazo.
D. Guillermo Medrano.
D. N. Revolta.
D. Javier Arango.
D. José Betancourt.
D. Angel Bueno.
D. Ricardo Recio.
D. Cruz Romero.
D. Felipe Basulto.
D. Javier Vega.
D. N. Arredondo.
D. Francisco Céspedes.
D. N. Castellanos.
D. José Berrenquy.
D. Ramon Perez Trujillo.
D. Domingo Diaz.
D. Regino Avilés.

Me es imposible recordar más.

La mayor parte de los jefes y oficiales se dirigen á diferentes puntos de la isla, donde han de establecerse, segun su voluntad, y en los nuevos poblados se establecen gran número de familias é individuos de sus tropas.

Soy de Vd. affmo.—*F.*

## La situacion de Stamboul.

En una carta fechada en Constantinopla el 1.° de febrero, y dirigida al *Courrier des Etats Unis*, encontramos los siguientes interesantes detalles sobre situacion que reina en la capital del moribundo imperio otomano:

«Cuando Mahomet II apareció delante de Byzancio con 270.000 hombres y trescientos buques, el emperador Constantino Dracoses se esforzó para obtener el socorro de la Europa y por realizar la union tantas veces intentada de las dos Iglesias. Sus súbditos, más fanáticos, quizá que los musulmanes de nuestros dias, respondieron que preferian ver «el turbante en Constantinopla que la tiara del Papa ó un capelo de Cardenal.»

Genadio, un monje que se decia inspirado y á quien Mahomet recompensó más tarde elevándolo á la dignidad de patriarca, recorrió las calles exclamando: «Abrid vuestras puertas ántes de esperar que el enemigo las abra; dejadle penetrar en el seno de vuestras murallas.»

En la poblacion, que contaba 400,000 almas, Constantino no encontró más que 5,000 combatientes, á la cabeza de los cuales se hizo matar, pidiendo á algunos cristianos fieles que le cortasen la cabeza; todo el resto permaneció indiferente á la catástrofe en la cual se abismaba el imperio de Oriente.

Evidentemente, Abdul Hamid no se hará matar cuando los rusos se presenten; nosotros no tendremos letrados que discutan sobre las reglas de la puntuacion cuando el enemigo coloque sus baterías; pero la resignacion presente es igual á la indiferencia de los bizantinos de 1853.

Lo que queda de vitalidad en Turquia se ha consumido en sus últimos esfuerzos militares, no hay que dudarlo. Entre toda esta multitud que llena las calles de Stamboul, es imposible descubrir una huella séria de angustia patriótica.

Nosotros asistimos á un desmoronamiento aterrador y completo. Se vé que lo que se quiere es llevarlo á cabo de una vez.

Mr. de Bismarck, se pretende, ha dicho: «es necesario que la cuestion de Oriente no exista ya; es una pesadilla á la cual es necesario poner fin,» y es sabido hoy que desde el principio de la insurreccion de la Herzegovina, excitaba el conde de Andrassy á una ocupacion. La Grecia misma va á tener su pedazo, el Epiro y la Tesalia; y esto sin tener necesidad de hacer durante cinco años de guerra de Klephtes, como ella habia decidido y como me aseguraba un heleno muy comprometido en el movimiento.

La cuestion para nosotros aquí es siempre de saber si en la última hora de este hundimiento no no nos alcanzarán algunos escombros.

Los turcos toman su partido en caso de la entrada de los rusos en Constantinopla. No se hacen ilusiones á este respecto, y se consuelan pensando que los alemanes entraron en Paris.

Por lo que se vé, los turcos hacen de buena gana una comparacion entre nuestras desgracias de 1871 y su desastre actual, mirándolo con buena cara, sin comprender aun toda su extension.

Yo consideraba esto cuando los voceadores de periódicos se exparcen por las calles gritando un suplemento. Este suplemento anuncia la conclusion del armisticio y pretende que los ministros se han dirigido al Palacio para «felicitar á S. M. en ocasion de este suceso.»

¿Felicitar no es en esta circunstancia un eufemismo muy extraño? Lo que nos amenaza es la miseria. Varios diputados han ido á ver al gran Vizir para arreglar el aprovisionamiento de la ciudad; se han tomado las medidas necesarias á este respecto. En los alrededores de Varna hay grandes cantidades de granos que se ha resuelto hacer venir. La precaucion es buena sin disputa.

Uno de nuestros doctores franceses acaba de traer de Andrinópolis un tren de diez y siete wagones llenos de heridos, y ha contado en una de las sesiones de la Cruzada Roja, el espectáculo al que ha asistido durante el trayecto; en cada estacion los grados estaban amontonados por millares; en Ichorla, acudian hambrientos y pedian con amenazas que se les diese de comer. Ha sido necesario admitirlos á partir la sopa reservada á los heridos. Hé aquí á los desgraciados que tenemos al rededor de nosotros por millares: para ellos hemos dirijido un llamamiento á la Europa, haced de manera que sea oido; la caridad se agota aquí y tiene gran necesidad de vuestro concurso.

El número de los refujiados era, hace dos ó tres dias, de ochenta mil; se eleva hoy á más de ciento cincuenta mil; los que llegan del lado de Andrinópolis, son casi todos musulmanes; las mujeres y los niños están cubiertos de harapos y mueren de frio y de hambre.

Todos los dias la estacion de Sirkepji-Iskeleni, vé llegar partidas innumerables de desgraciados que están sin alimento y sin abrigo. Los habitantes y el gobierno hacen todos los esfuerzos para remediar tan gran miseria; los cuarteles, las mesquitas, las iglesias, las casas particulares están llenas de desgraciados; vários palacios del sultan les han sido abiertos. Los musulmanes y los cristianos, los indígenas y los extranjeros, rivalizan en ayudar á estos infortunados; pero para alimentar tanta gente la dificultad es extrema y el pan vá haciéndose ya muy caro.

El furor del agiotaje ha vuelto á tomar creces: judíos, armenios y griegos, se precipitan á los mercados y cada dia partidas de circacianos, llegados del interior, hacen nuevas ventas de sus mercancías robadas. Ellos llevan consigo rebaños que el gobierno no se ha atrevido á quitarles, y trafican así, á la vista de la autoridad impotente, cuando los víveres están á punto de faltar.

Estas bandas innumerables y terribles constituyen nuestro más grande temor. El amor desenfrenado del pillaje y el ódio á todo lo que no es musulman, pueden impulsar á estas hordas á aprovecharse de una emocion popular, en la primera ocasion que se presente, para entregarse á todos los excesos en la capital misma. Por tanto el sultan no está tranquilo y parece que en el jardin de Yeldiz-Kiosk se ha organizado una batería de artillería. La autoridad ensaya estas medidas para proteger á los habitantes y para defenderse á sí misma. De buena gana se desembarazaria de estos huéspedes terribles; pero ¿cómo hacerlo? Todos están armados, y armados hasta los dientes.

Sin embargo, un buque que ha fondeado el lúnes en nuestro puerto y que traia 3,000 tcherkesses, no ha recibido permiso para desembarcar á los pasajeros, y al otro dia salió á la vela para la costa asiática, donde ha debido producir gran espanto entre los habitantes, que sin duda alguna serán saqueados.

A esta medida se atiene el gobierno; probará desarmar aisladamente á los circacianos y á los Zecbeks, y los enviará á la costa de Asia.

## Nueva protesta.

Algunos dias ántes de su muerte S. S. Pio Nono ejercia un último acto de su soberanía temporal dictando á su secretario de Estado la vigorosa protesta siguiente:

Palacio del Vaticano, enero 17 de 1878.

El Soberano Pontífice, no olvidando el deber sagrado que le incumbe de defender los derechos imprescindibles de la Santa Silla, ha tenido cuidado de reclamar contra los actos sacrílegos sucesivamente consumados por el gobierno subalpino contra el poder temporal de esta Santa Silla.

Entre las reclamaciones de este género, debemos recordar especialmente, á causa de la gravedad de las circunstancias que las provocaron, las notas dirigidas por órden de Su Santidad al Cuerpo diplomático el 21 de marzo de 1860, contra la anexion de las Romanias al Piamonte; las del 12 y 18 de setiembre del mismo año cuando la violenta invasion de los Marcos y la Umbria; la del 15 de abril de 1867, cuando el difunto rey Victor Manuel tomó el título de rey de Italia, y finalmente la del 20 de setiembre de 1870, fecha de la criminal ocupacion de Roma.

Estas solemnes protestas conservan siempre su pleno vigor, y los años que han corrido, léjos de quitarles su fuerza, han demostrado al contrario más adelante toda su sabiduría y necesidad, puesto que la experiencia ha manifestado los numerosos obstáculos que el Santo Padre ha debido encontrar en el cumplimiento de su ministerio apostólico desde el momento en que ha sido despojado de sus Estados.

Y como hoy, despues de la muerte de dicho rey, su hijo primogénito, en un manifiesto solemne y público, tomando el título de rey de Italia, ha pretendido sancionar el despojo consumado, yo no puedo en nombre de la Santa Silla guardar un silencio del que ciertas personas pudieren sacar quizás falsas deducciones, atribuyéndole una significacion errónea.

Por estos motivos, y queriendo además llamar la atencion de las potencias sobre las durísimas condiciones en las que la Iglesia continúa encontrándose, Su Santidad ha ordenado al infrascrito cardenal, secretario de Estado, protestar y reclamar de nuevo para mantener intacta contra una nueva expoliacion el derecho de la Iglesia misma sobre sus antiguos dominios, destinados por la Providencia Divina á asegurar la independencia de los Pontífices romanos, la plena libertad de su ministerio apostólico, la paz y la tranquilidad de los católicos esparcidos en el mundo entero.

En ejecucion de las órdenes de Su Santidad, el autor de este escrito expresa, pues, las protestas más completas y más formales contra el acto de que se trata y contra la consagracion que por consiguiente se pretende dar á las usurpaciones ya cometidas en detrimento de la Santa Silla.

Ruega á Vuestra Excelencia ponerlas en conocimiento de vuestro gobierno, y aprovecha esta ocasion para renovaros los sentimientos de su más distinguida consideracion.

Firmado:—*Juan*, Cardenal Simeoni.

## NOTICIAS VARIAS.

En el sorteo ordinario verificado hoy, han obtenido los premios mayores los quince números siguientes:

| | |
|---|---|
| 13183 | $ 200.000 |
| 15075 | 50.000 |
| 25846 | 25.000 |
| 13916 | 10.000 |
| 15704 | 10.000 |
| 20434 | 5.000 |
| 20501 | 5.000 |
| 10524 | 5.000 |
| 16718 | 5.000 |
| 14749 | 5.000 |
| 12712 | 5.000 |
| 10719 | 5.000 |
| 3154 | 5.600 |
| 3963 | 5.000 |
| 120 | 5.000 |

En nuestro colega *Las Novedades* de Nueva York del dia 27 de febrero leemos las siguientes líneas:

«El lúnes por la mañana salió del puerto de Nueva York la barca *Anastasia*, que conduce los restos mortales de quien fué en vida director de *El Cronista* durante muchos años, que van á ser enterrados en uno de los cementerios de la capital de España.

El buque salia empavesado y con su bandera á media asta, últimos honores que se han tributado en Nueva York al infatigable periodista.

La barca *Anastasia*, construida en el Ferrol, pertenece á la matrícula de la Coruña; su capitan, el señor don Andrés Abrisqueta, lleva treinta y nueve años de mar, y más de veinte y dos con mando de buque. Tanto los señores Carricarte, propietarios del buque, como su consignatario el señor Latasa, y el capitan, merecen los mayores elogios por su amabilidad en prestarse á la conduccion del cadáver.»

Segun dice un diario madrileño, se proyecta realizar en la corte, por iniciativa particular, una Exposicion universal.

Los ingenieros españoles señores Rodrigo y Rodriguez Trio, residentes en Paris, han alcanzado recientemente un triunfo envidiable con la fabricacion de un nuevo líquido para el alumbrado, líquido que sobrepuja el poder iluminante del petróleo, pues da una tercera parte más de luz consume una quinta parte ménos, y no cuesta ni la mitad.

El dia 18 de enero último una comision de la Academia de ciencias de Paris, estuvo á presenciar los ensayos los cuales fueron tan satisfactorios, que inmediatamente se ocuparon dichos señores en redactar un informe, cuyo preámbulo escribieron allí mismo, haciendo justicia á los conocimientos científicos de nuestros compatriotas.

Segun telegrama recibido en la casa consignataria, el vapor español *Santiago*, llegó sin novedad á Puerto-Rico, continuando su viaje para esta hoy á las seis de la tarde.

## NOTICIAS EXTRANJERAS.

Continuamos publicando las contenidas en los últimos periódicos recibidos de Nueva York.

### América del Norte.

SANTO DOMINGO.

*Santómas 17 de febrero.*—Al dia 7 alcanzan las noticias de Santo Domingo, en cuya fecha la insurreccion se habia extendido por todo el país. Desde el 3 de febrero ha estado sitiada la ciudad de Santo Domingo por los rebeldes, al mando de los generales Guillermo y Bellini. El presidente Baez queria resistir el sitio, y habia colocado artillería en los fuertes que guarnecen la ciudad. Baez no podrá resistir más tiempo por el estado de desolacion del país. Las cárceles están llenas, los víveres escasean, y los precios suben todos los dias. El comercio está en una situacion deplorable en toda la república, y son muy pocos los comerciantes que pueden cumplir sus compromisos. No se han recibido todavía detalles sobre la guerra en las provincias del Norte, por que todas las comunicaciones están interrumpidas.

MÉJICO.

*Méjico 3 de febrero.*—En un momento de calma y de tranquilidad en los espíritus, el gobierno de Washington puede poner término justo á sus diferencias con Méjico, y aun se perciben síntomas que así lo hacen suponer. Méjico entretanto debe continuar, y continuará guardando la misma actitud aconse ada por su derecho, por su honra y por sus tradiciones.

Con el advenimiento del año nuevo, coincidieron los anuncios de un cambio parcial de gabinete, que adquirieron luego consistencia con la dimision del secretario de la guerra; pero esta no fué admitida por el presidente, y la crisis se resolvió, dejando en sus puestos á todos los ministros.

La política, pues, del ejecutivo no ha variado, y ni el receso en que se hallan las Cámaras, ni la fatiga que sucede á los trabajos comprendidos para lograr un objeto, hacen creer en una variacion probable.

Con arreglo á la Constitucion del país, el Congreso debe reunirse el 1° de abril próximo, durando el período de sus sesiones hasta el último dia de mayo. La misma Constitucion previene que este período se destine de toda preferencia al exámen y votacion de los presupuestos del año fiscal siguiente, y por tanto, es de creer que no serán muchos los negocios de otro género que las Cámaras despachen, sin embargo de haber que dado pendientes de resolucion varios de notorio interés público al clausurar sus sesiones anteriores.

Es casi seguro que se ocuparán de revisar, y darán su aprobacion á un contrato firmado en este mes por el secretario de hacienda, y los señores L. C. Garcia y C° relativo al establecimiento de una línea de vapores entre los puertos mejicanos, la Habana, Santander, Havre y Liverpool.

Esta línea tiene respecto de Méjico el principal objeto de facilitar la exportacion de efectos nacionales. Todos los que sean de produccion mejicana, fabriles, agrícolas, ó de cualquiera otra especie, inclusa la piedra mineral, pagarán de flete el veinticinco por ciento de la tarifa publicada en Veracruz en el presente mes de enero, por la línea intitulada *West Indian and Mexicand Steamers.*

La compañía ganará una subvencion de seis mil pesos por viaje redondo, y trasportará las balijas que contengan la correspondencia escrita ó impresa y demás bultos remitidos por las administraciones de correos de los puertos designados en el contrato, cuya duracion será de cinco años. Otro contrato sobre vapores se ha celebrado tambien entre el secretario de gobernacion y los señores Ritter y C° como representantes de los señores Alexandre é Hijos, de Nueva York. Segun este contrato se harán viajes periódicos de vapores de Veracruz á Nueva York y á Nueva Orleans.

Los vapores de la línea de Nueva York ha harán un viaje redondo cada dos semanas, tocando de ida y vuelta en los puertos de Frontera, Campeche, Progreso y Habana, y los vapores de la línea de Nueva Orleans lo efectuarán cada tres semanas, haciendo escala de ida y vuelta en los puertos de Tuxpam, Tampico y Matamoros.

La duracion del contrato será de cuatro años; la subvencion que pagará el gobierno, de dos mil setecientos pesos por cada viaje redondo para la línea de Veracruz á Nueva York, y dos mil pesos para la de Nueva Orleans á Veracruz. Es obligacion de la compañía rebajar el diez por 100 de la actual tarifa á los artículos siguientes: henequen, azúcar, café y pieles de todas clases.

Los vapores de la línea Alexandre son ya bastante conocidos, pues hace tiempo que están haciendo viajes periódicos. El contrato de que hemos hablado recae sobre bases preexistentes, que hoy se amplian y se reforman.

La comunicacion marítima entre Méjico, la Habana, los Estados Unidos y Europa, adquiere, pues, mayor facilidad y mayor movimiento, que aumentarán más todavía, si realiza sus miras la empresa de la línea hispano-americana de vapores correos que dirije en Madrid don Nicolás Benitez de Lugo, pues naturalmente ha de comprender en sus viajes los puertos de nuestra república.

La hacienda pública fortalece su crédito, atendiendo á las obligaciones que tiene contraidas, y cubriendo anticipadamente los gastos de las listas civiles y militar. No se han hecho contratos ruinosos para el erario, y la recaudacion y distribucion de los impuestos han mejorado mucho en cuidado y exactitud.

Los Estados se hallan tranquilos; hay sosiego en todo el país; existe regularidad en el cambio de comunicaciones, y la situacion general no inspira temores ni desconfianza.

El Sr. Foster, representante de los Estados Unidos en Méjico, salió de esta capital en el presente mes con direccion Washington, á donde le llevan los negocios relativos á uno y otro gobierno. Nuestra sociedad le conoce hace tiempo, ha estimado sus prendas personales, y desea su regreso con el restablecimiento digno y honroso de las relaciones entre ámbas repúblicas.

ESTADOS UNIDOS.

Leemos en *Las Novedades* de Nueva-York del 23 del pasado.

*Natalicio de Washington.*—Ayer hizo ciento cuarenta y seis años que nació George Washington, el fundador de esta república, cuyo nombre vivirá en la historia de la humanidad, para servir de modelo á las generaciones por sus grandes virtudes cívicas y personales. Ningun periódico de la localidad hace, como parecería natural, un elogio de su brillantísima carrera; y el *Herald*, que es el que más dice, se expresa del siguiente modo:

«Solamente hay en nuestra historia una persona que haya recibido la honra de que su nombre se apunte en el calendario de las fiestas nacionales y patrióticas, y quizás sea mucho para un pueblo en la corriente de las ideas democráticas extremas rendir este homenaje aun cuando no sea más que á un hombre sólo. Ya hay indicaciones de que el espíritu democrático acabará con el tiempo por prescindir tambien de este nombre.»

Conformes estámos con el *Herald* en considerar de muy mal agüero el echar al olvido el nombre de Washington; pero no lo estamos en que sea esto debido á las tendencias democráticas. El visionario Augusto Comte, cuando reconstruia una sociedad y una religion nuevas, sustituia el culto á Dios por el culto á la humanidad, y reemplazaba los nombres de los santos con los de los grandes hombres. Las ideas democráticas no pueden temer que el nombre de Washigton se recuerde y se venere siempre, pues es el fundador de la república más sólidamente constituida que hoy existe.

Pero tenga ó no razon el *Herald*, es lo cierto que hoy ha sido un dia de fiesta en los Estados Unidos y que no se han hecho negocios, lo cual en este país significa que se hace por Washington lo que aquí se vé muy raras veces: dejar durante veinte y cuatro horas de buscar dinero, como fin á que deben tender todas las aspiraciones de la vida.

El tiempo tampoco ayuda mucho á las diversiones propias del dia. Las banderas que se han atrevido á salir al viento, pronto se han quedado mústias y abrazadas al asta que las sostenia, abatidas por el agua que no ha cesado de caer con más ó ménos fuerza. Los octogenarios de 1812 no se han reunido por la inclemencia del tiempo.

*La ley de la plata.*—Despues de una hora de discusion en que hubo muchos discursos, todos muy breves, pues ninguno pasó de tres minutos, se aprobó en la cámara de representantes la ley de la plata, y todas las enmiendas con que habia salido del senado. El lúnes será presentada al presidente, y ya hay quien dice que el presidente no le impondrá su *veto*, en vista de que en ámbas cámaras del congreso ha obtenido una mayoría de más de las dos terceras partes de los votantes.

Ya el otro dia dijimos lo que en realidad significaban las enmiendas del senado: el secretario Shérman puede cumplir la ley y sin embargo no poner en circulacion durante mucho tiempo «el peso de nuestros padres», como han dado en llamar á los noventa centavos, que la ley manda que se tomen por ciento.

Dice el mismo periódico en su número del 27.

*El ejército.*—Estamos en la época de reclutamiento, y no será inoportuno dar alguna idea respecto al ejército de los Estados Unidos y á la manera de alistarse los soldados.

Antes de la guerra de sucesion eran emigrantes irlandeses y alemanes la inmensa mayoría de los soldados federales. Desde entonces ha ido en aumento el número de norte-americanos de nacimiento en las filas, y segun el último registro oficial publicado, la nacionalidad de los 183,059 reclutas que han entrado en el servicio desde de 1865, es la siguiente:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Estados Unidos | 97,036 | Nacidos en la mar | 71 |
| Irlanda | 38,649 | Terranova | 68 |
| Alemania | 23,127 | India | 47 |
| Inglaterra | 9,037 | Australia | 30 |
| Cananadá | 4,703 | Isla del príncipe Eduardo | 30 |
| Escocia | 2,456 | Brasil | 25 |
| Francia | 1,593 | America del S. | 22 |
| Suiza | 1,592 | Grecia | 16 |
| Dinamarca | 719 | Portugal | 11 |
| Suecia | 598 | Chile | 11 |
| Austria | 581 | Africa | 5 

más naciones, incluyendo la China y el Japon. De los 48,039 norte-americanos, 421 eran negros.

*Honradez heróica.*—No hace muchos dias dijimos que era preciso no mirar siempre las cosas de los Estados Unidos á través de cristales oscuros, pues en este país habia mucho bueno y actos individuales heróicos, y hoy se nos presenta un ejemplo. El cajero de un banco de Dexter fué á trabajar á su establecimiento el domingo, y estando allí solo debió ser atacado por dos ó tres que le dieron tormento para que les enseñara á abrir las cajas. Ese fiel empleado murió á las pocas horas sin revelar el secreto, y salvando, por consiguiente, los fondos depositados á su cargo.

## Revista Científica.

Tramvía de vapor en Barcelona.—Observaciones termométricas.—Método de preparar la madera incombustible.—Modificacion Berton para las máquinas de vapor.—Cocina de campaña.—Trabajos del túnel San Gotardo.—Aplicaciones del ácido salicílico.—Censo de la poblacion en Francia.—Insecto destructor del *Phylloxera*.

Se han hecho en Barcelona ensayos de traccion al vapor en el tramvía que une á dicha poblacion con San Andrés de Palomar, cuya distancia de cinco kilómetros se recorrió en veinte minutos por uno de dichos vehículos. Las máquinas de que dispone la línea son del sistema Merryweather, cuyo aspecto exterior es de un carruaje de 3 metros de largo, 1,80 de ancho y 3 de altura, no causando ruido su locomocion y desprendiendo muy poco humo cuando su hogar es alimentado por cok. Las ruedas están protejidas por unas placas de hierro verticales, destinadas á separar los obstáculos que haya en la vía. Las calderas son horizontales, sistema Fiel, y la máquina tiene un depósito para agua y carbon, capaz para funcionar tres horas, estando provista de un freno, que haciéndolo obrar con el pié, comprime fuertemente las cuatro ruedas.

La potencia de estas máquinas es de seis caballos de vapor, pudiendo desarrollar hasta 10: basta un solo conductor para el manejo y conduccion, y es de esperar que en la práctica ofrezca su uso los mismos resultados que en Francia, Inglaterra y otros países de donde ha tomado ejemplo el concesionario de esta línea, Sr. Souyol.

Segun el profesor Palmieri, el año último ha ofrecido grandes anomalías termométricas, pues en el Observatorio del Vesubio el calor ha llegado á 31° centígrados, habiendo descendido hasta 7° bajo cero, extremo hasta ahora no conocido, ni aún en enero y febrero, durante los 25 años que lleva de ejercicio aquel Observatorio.

Parece que dá buenos resultados el procedimiento Jolacci, nombre de su inventor, destinado á hacer incombustible é impermeable la madera. Las sustancias empleadas al efecto son: sulfato de zinc, 55 libras; potasa americana, 22 libras; alumbre amoniacal, 14 libras; óxido de manganeso, 22 libras; ácido sulfúrico á 60°, 22 libras; agua de rio, 55 libras. Estas materias, ménos el agua y el ácido sulfúrico, se mezclan en una caldera, añadiéndose el agua á una temperatura de 45°, hasta lograrse la completa disolucion de los ingredientes, despues de lo cual se vierte paulatinamente el ácido sulfúrico.

Para preparar la madera se coloca en un recipiente, procurando que se inyecte perfectamente de la precitada composicion, con lo cual se deja hervir durante unas tres horas; trascurridas que sean se extrae la madera, dejándola secar al aire libre, con lo cual queda terminada la operacion. Segun el inventor, la madera por estas operaciones queda como petrificada, y las más intensas llamas tan solo carbonizan ligeramente su superficie.

Constituye un gran adelanto para la marina la modificacion introducida por Mr. Berton en las máquinas de vapor, encaminada á lograr la mayor potencia sin aumentar para ello el peso de las calderas. En América se ensayó hacer para una corriente de aire comprimido por los hogares á fin á fin de avivar la combustion; pero este medio tiene el inconveniente de que al abrir los fogoneros las puertas del hogar, salian por ellas las llamas. El medio propuesto evita este gran inconveniente, porque el aire se inyecta en la base de la chimenea, lográndose así un gran tiro.

En la fragata de guerra *Resolue* la máquina desarrollaba una potencia de 700 caballos de vapor, consumiendo 80 kilógramos de carbon por hora y metro cuadrado de emparrillado: aplicada esta modificacion, el gasto de combustible se elevó casi al doble, pero la fuerza desarrollada por la máquina aumentó en la misma proporcion, además de la fuerza invertida como motora del aparato para la inyeccion de aire para obtener el mayor tiro en la chimenea. Por este medio, sin aumentar el peso de las calderas, puede en un momento dado obtenerse una potencia mayor que cuando la máquina funcione segun el régimen ordinario, es decir, sin que rija esta modificacion.

El coronel Lichin, del ejército ruso, ha ideado un modelo de cocina de campaña, cuyo uso es muy ventajoso para el ejército, no solo en tiempo de guerra, si que tambien en épocas normales. Esta cocina es conducida por un carruaje tirado por dos caballos, y está de tal suerte dispuesta que puede funcionar perfectamente durante la marcha, aunque sea muy rápida y se verifique en terrenos accidentados, quedando sitio en el carruaje para conducir un repuesto de víveres y diversos utensilios de cocina.—El aparato se compone en su parte esencial de dos marmitas de cobre estañadas interiormente, colocadas una dentro de la otra; se llena hasta la mitad de agua, y el vapor que se produzca puede penetrar en la marmita interior, donde se colocan los alimentos, por medio de un tubo encorvado que se origina en la cubierta de la marmita exterior. Ambas están cerradas herméticamente y vienen á constituir una marmita de Papin provista de sus correspondientes válvulas de seguridad y demás accesorios necesarios. De este modo los alimentos no están espuestos directamente á la accion de fuego y tan solo á la del agua hirviendo y del vapor de agua que se produce en la marmita exterior.

Con este aparato se puede preparar en tres horas el rancho necesario para una compañía de 250 hombres. La capacidad de la marmita exterior es de 25 vedros (307 25 litros.)

Obstáculos imprevistos é inevitables retrasan los trabajos del túnel de San Gotardo; grandes masas de agua, saliendo violentamente de entre las rocas, inundan la vía, poniendo en peligro á los trabajadores; estractos de granito cristalizado oponen gran resistencia á las poderosas máquinas usadas para el taladro, en términos que ha sido preciso recurrir al empleo de la dinamita. La perseverancia de los encargados de esta obra tan grandiosa han ido venciendo todas estas contrariedades, adelantándose los trabajos en términos de que hoy tan solo falta para su terminacion perforar una longitud de 6,5 kilómetros.

Las buenas aplicaciones que en terapéutica tiene el ácido salicico (encontrado por primera vez en la corteza de los sauces, y obtenido tambien del ácido fénico, del que es derivado) y sus compuestos, ha motivado que exagerasen sus propiedades medicinales presentándolo como una panacea universal. Cierto que son muchas sus aplicaciones en medicina; pero estas tienen su límite bajo el punto de vista de ser reconocidamente ventajoso su uso, que siempre debe ejercitarse con mucha prudencia.

El profesor Germain Sée ha dado á conocer el resultado de sus ensayos en el hotel Dieu: el ácido salicico no es un antiséptico más eficaz que el ácido fénico, y como febrífugo son sus propiedades cuestionables, como confirman tambien las observaciones hechas en Alemania por Bernhum y Heller. En cambio, es rápida y eficaz su accion para combatir las afecciones reumáticas agudas, cuya curacion se consigue en muy pocos dias bajo la accion del ácido salicico, obteniéndose igualmente satisfactorios resultados cuando la dolencia reviste un carácter crónico.

Para la curacion de la gota aguda ó crónica los resultados son notables, empleando para ello Mr. Sée el salicicato de sosa, en cantidad de ocho gramos al dia, cuyo medicamento, exento de accion irritante sobre los intestinos y muy saludable en agua, se propina en pequeñas dósis, de hora en hora ó cada tres horas, debiendo proseguirse el plan durante quince dias; aunque antes se obtenga la curacion, para evitar la reaparicion de la dolencia. El único inconveniente que ofrece un uso continuado del ácido salicico es que afecte algo al aparato auditivo, entorpeciendo sus funciones.

Mr. Sée aconseja preferir el salicicato de sosa el ácido salicico, advirtiendo que este, cuando impuro, pues suele el del comercio contener ácido fénico, produce irritaciones y úlceras en la garganta y estómago. Dicho doctor recomienda la disolucion al décimo de ácido salicico puro, no pasando nunca de la dósis de tres á cuatro granos cada vez.

El censo de la poblacion de Francia en el año 1876, publicado por el ministerio del Interior, es, segun refiere el *Journal Oficiel*, la siguiente: solteros, 9805,761; casados, 7.587,257; viudos, 980,619, ó bien un total de 18.373,639 varones: solteras, 8,944,366; casadas 7.587,080; viudas 2.020683 ó sea 18.532,149 hembras, lo cual da un total de 36.905,788 habitantes. Comparada esta cifra con la poblacion existente en mil ochocientos setenta y dos, resulta que desde entonces ha aumentado en 802,867 habitantes, ó sea 2,17 por 100.

En una comunicacion dirigida á la Academia de Ciencias de París, Mr. L. Salmian notifica que ha observado una larva que persigue al *phylloxera vastratrio* con tal voracidad, que ha presenciado la destruccion de 95 de estos insectos en el plazo de 10 minutos. Un gran beneficio reportaria á los viñedos la propagacion de aquel insecto, pues los daños que sufren por aquella plaga son incalculables, y los diversos medios que se han propuesto para combatirlo no han resultado en la práctica completamente eficaces. A lo que parece, las larvas á que se refiere Mr. Salmian pertenecen á un dipterro del género Syrphus, ó algun afine, cuya clasificacion podrá con más certeza determinarse cuando haya terminado su metamórfosis. Las larvas del género espresado han sido admirablemente estudiadas por Mr. Reaumur, que las designó con el nombre *gusanos comedores de pulgones.*—*Eugenio Plá y Ravé.*

## GACETILLA.

***Miércoles de Ceniza.***—Sonó la hora de la penitencia, y este asunto que á algunos les parecerá baladí, tiene más importancia en la vida del hombre, de lo que á primera vista parece.

Sin duda alguna la religion cristiana provee con exquisito cuidado á las necesidades del espíritu, y siempre previsora, atiende como experto médico á la de la materia.

Por eso quizás señaló para dias de penitencia y de reposo aquellos que siguen á los de locura, bullicio y fatiga; por eso tal vez buscó la ocasion en que el hombre separa su vista en un momento de obsecacion de la eterna dicha para fijarla exclusivamente en la efímera y pasajera que le ofrecen los mundanos placeres, para hacerle volver de su desvario y de su loco frenesí, y recordándole que es su alma inmortal y su cuerpo polvo vil, y que le importa más la cumplida satisfaccion á las necesidades del espíritu que á la de la materia, le excita á hacer penitencia y á convertir al cielo sus miradas, logrando así restablecer el indispensable equilibrio entre los dos elementos contitutivos de la humana personalidad, y consiguiendo, al par que llevar la tranquilidad al alma, combatida por el huracan de la pasiones que en los dias de Carnaval reina, y al cuerpo el reposo que le es necesario y que en mal hora perdió en ajitados bailes y otros excesos.

***Vacuna.***—Correspondiendo á las benéficas miras de la Academia de Ciencias, ponemos en conocimiento del público que dicha corporacion ha determinado habilitar tambien los lúnes, de once á doce de la mañana, para inocular el virus preservativo de las viruelas.

***Tacon.***—La compañía lírica francesa dará mañana juéves la quinta funcion de abono, con la ópera en cuatro actos del maestro Donizetti *Lucie de Lamermoor*, desempeñando la señora Alhiza el papel de protagonista.

***Bailes de máscaras***—Ayer los hubo, y por cierto que se vieron muy favorecidos los que se efectuaron en las sociedades el Recreo Español y el de Obreros.

Tambien en el gran teatro se veia una alegre y numerosa concurrencia, que discurría por la espléndida sala y el patio, dando rienda suelta á su buen humor.

En cambio el hermoso y elegante salon del teatro de Payret brillaba por su buen alumbrado, es cierto, pero no así por el número de las parejas, que en él habia, que estaban, puede decirse, en familia.

De nada sirvió que la entrada se pusiera á dos pesos y que las tres orquestas estuvieran toda la noche toca que toca.

***Los Brigantes.***—Este es el nombre de una nueva pantomima que se dará mañana juéves en el Circo Metropolitano, en la funcion dispuesta á beneficio del aplaudido ecuestre Mr. Fish, la cual ha sido ensayada con mucho esmero, segun se nos asegura, y vestida con lujo y propiedad.

Para esta funcion, que será muy variada, se han vendido ya casi todos los palcos y lunetas, lo cual hace esperar que el beneficiado conseguirá un buen resultado.

Anoche se vió este popular Circo tan favorecido como los dias anteriores, cumpliendo todos los artistas á satisfaccion del numeroso auditorio, á juzgar por los aplausos que á cada momento resonaban.

La funcion terminó á las diez y cuarto, para que los aficionados á rendir culto á la diosa Terpsicore pudiera satisfacer su capricho, asistiendo á los diferentes bailes que se dieron.

***Muerte de un gran artista.***—Ha muerto en Pesth Eduardo Szigligeti, director del teatro nacional húngaro. Autor dramático distinguidísimo y fecundo, alcanzó veinte premios académicos y era considerado como el fundador del teatro húngaro contemporáneo.

Aún se recuerda en Pesth la ovacion de que fué objeto en 1872, cuando se representó su centésima obra *Struensée*.

Su muerte, que ha sido una pérdida para el arte, ha producido gran sentimiento.

***El Cádiz.***—Se ha publicado y hemos recibido el número 27 de esta importante revista, que publica dos trabajos que han de llamar grandemente la atencion, uno el tercer acto *primitivo* del drama *Lo que no puede decirse*, de D. José de Echegaray, y otro un estudio sobre literatura española, proponiendo á S. M. la Reina, los medios de protegerla, de la Directora de esta notable revista.

Hé aquí el sumario:

*Grabado:* Vista del bosque de Bologne en el año 1856, y modas de aquella época.

*Texto:* La literatura española, por Patrocinio de Biedma.—Cartas de la Exposicion de París, por J. Emilio de Santos.—Poesías: á Giacinta Pezzana Gualtieri, por J. P. Velarde.—(Iris de Paz), por José Echegaray.—Al Cardenal Patriarca de las Indias, por Patrocinio de Biedma.—Explicacion del grabado.—*Lo que no puede decirse*, tercer acto *primitivo*, por J. Echegaray.—Literatura extranjera: La roca de Tregunc (continuacion), por **.—Correspondencia de *El Cádiz*, por P. de B.—Noticias.—Problema de Ajedrez.—Limosna de *El Cádiz*.

***Recreo de Obreros.***—Los tres bailes que esta afortunada Sociedad ha celebrado en las noches de Carnaval no han podido hallarse más concurridos. A los Señores de la Junta Directiva hemos oido manifestar, que si en cuanto al número de los asistentes el resultado ha excedido á sus esperanzas, en lo tocante al buen órden han satisfecho completamente los deseos que abriga la Sociedad, como la que más, cuando se trata de hacer guardar las buenas formas, que son las que le dan prestijio.

El Recreo de Obreros, en este como en el año anterior, ha dejado bien sentada la fama de que goza.

Lo mismo decimos del Recreo Español, cuyos salones se han visto favorecidos estos dias por numerosísima concurrencia. En ámbas sociedades reinó el mayor órden y la más franca é inofensiva alegría. Así nos gusta.

***El juéves 7.***—Segun nuestro número de esta mañana, escrito como es consiguiente con fecha 5, hoy seis debia tener lugar en el Pabellon ruso el beneficio del niño Feeley, pero como en esto dia no pueden verificarse funciones, y el *mañana* á que se refiere el programa es el juéves 7, nos apresuramos á manifestarlo así, recomendando la asistencia.

***Música ratonera.***—En demostracion de que no es muy hiperbólica la atraccion que se atribuia á la música de Orfeo, obrando sobre los reinos animal y mineral, trascribimos á continuacion la siguiente anécdota que hallamos en un periódico de Milan:

«Un prisionero de Estado, que estaba confinado en la Bastilla de París, con objeto de hacer ménos pesadas las ociosas horas de su cautiverio, solicitó del alcaide de la prision que le procurase una flauta, cuyo instrumento tocaba con notable maestría.

El buen gobernador accedió á su pretension, y en su consecuencia, los callados ecos de su celda reprodujeron los dulcísimos sones que el prisionero arrancaba de su instrumento favorito.

Pocos momentos llevaba de su filarmónico ejercicio, cuando de un agujero vió salir cautelosamente un raton que se sentó sobre sus patas, adoptando la actitud de un *dilettanti* que no quiere perder una nota.

Habiendo continuado la sesion, pronto pudo convencerse el flautista del sentimiento musical del pequeño roedor, pues en breve se le asociaron muchos otros individuos de su tímida familia, que llegaban presurosos á tomar parte en la orfeónica fiesta. No fué esto solo. Algunas velludas arañas descendieron de sus traspartentes habitaciones, quedándose como magnetizadas en tanto duró la música.

Cuando acabó de tocar el prisionero, todo el auditorio se retiró á sus moradas. Este experimento se repitió varias veces con un éxito creciente, á tal punto, que habiendo llegado á ser el público demasiado numeroso, el músico pidió un gato á sus carceleros. Adquirido el individuo de la raza felina, el flautista lo introdujo en una jaula dispuesta convenientemente para soltarlo en un momento preciso; hecho lo cual, dió principio á sus seductoras melodías. Cuando todos sus entusiastas admiradores estaban agrupados á su alrededor, lanzó de repente al feroz animal sobre sus enemigos, y, en el *sálvese quien pueda* que sobrevino, muy pocos ratones alcanzaron sanos y salvos sus guaridas. En las fiestas sucesivas salieron pocos y escamados.»

## ESPECTACULOS PUBLICOS.

GRAN TEATRO DE TACON.—Compañía lírica francesa.—A las 8: 5ª funcion de abono: «Lucie de Lamermoor.»

TEATRO DE PAYRET.—No se ha recibido el anuncio.

TEATRO DE CERVANTES. A las 7½ Acto 1º de la popular zarzuela «El barberillo de Lavapiés.»—A las 8½: Acto 2º de la misma.—A las 9½ Acto 3º de la misma.—A las 10½ «La soirée de Cachupin.

TEATRO DE TORRECILLAS. - A las 7½: «El polichinela.»—A las 8½: «El grumete.»—A las 9½: «Una funcion en la Mocha.—A las 10½: «Un caballero particular.

PABELLON RUSO—Gran funcion compuesta de ejercicios gimnásticos, los 4 leones, grandes novedades y graciosas pantomimas. A las 8.

CIRCO METROPOLITANO. — (Calzada del Monte esquina á Cárdenas.)—Funcion todas las noches. Los dias festivos dos funciones, á la una de la tarde y á las 8 de la noche.

Ejercicios Gimnásticos, Ecuestres de Variedades y pantomimas.

## SECCION DE INTERES PERSONAL


**Los doctores no están acordes** con respecto á la naturaleza del elemento curativo, calmante y vitalizador contenido en el Aceite de Hígado de Bacalao, pero es la opinion de los miembros más autorizados de la profesion que es la iodina que hace tantos milagros en los males hepáticos. La preparacion superior de este artículo por Hannan y Kemp contiene mucha mayor porcion de este ingrediente que es usual, pues se ejerce un esmero especial para precaver contra la deterioracion del Aceite durante los procesos necesaios para adoptarlo á fines medicinales. Para todos los males de los pulmones, de una mera irritacion de las membranas, hasta la tuberculacion, para bronquitis, y traquitis, congestion del hígado, hinchazones de las coyunturas y para todas las enenfermedades acompañadas por extenuacion y abatimiento se receta como específico seguro.

Una cucharada mezclada con dos del Pectoral de Anacahuita es el modo más fácil y mejor de tomar el Aceite.


*Sociedad benéfica y de recreo* LA CARIDAD.

Programa de las funciones del presente mes.

Lúnes 4 bailes de disfraces.
Sábado 9 idem de idem.

Habana, Cerro, 1º de marzo pe 1878.—El vice-secretario general.

NOTA.—Para estos bailes se admiten transeuntes conforme á Reglamento.

A la conclucion habrá carros para la Habana. 7-3mz,


# ¡LO MEJOR!

**Tintura de Salias, instantánea, para la barba y el cabello.**

Admirable composicion, segura é inofensiva, que produce un color negro y permanente, que jamás degenera en rojo, ceniciento tornasolado —Ofrece la gran ventaja de la brevedad del tiempo en su empleo, puesto que no es necesario dejar que se seque la primera untura para la aplicacion de la segunda; y esto es de reconocida ventaja para los barberos y peluqueros, que ahorran mortificar al parroquiano, haciendo ménos prolongada la sesion.—El fijador de este tinte es un portentoso descubrimiento, debido á continuas y complicadas combinaciones; y no contiene sulfureto de potasa, sustancia usada hasta hoy para el efecto, y que á más de quemar la piel, produce un olor nauseabundo é insoportable.

De cuantos cosméticos se anuncian hoy, la TINTURA DE SALIAS es la que dá mejor, más rápido y más positivo resultado. Su mayor recomendacion esta en probarla. Usese para convencerse de esta verdad.

**Depósitos: Perfumería Habanera, Obispo 42.**
**La Bella Habanera, de Corujo y Sobrino, Compostela 113. El Bosque de Boloña, Obispo 74.**
**Sarrá y Cp., Teniente-Rey 41. La Oriental, Muralla 10 y 12, La Australia, Obispo 31, y en la farmacia *La Amistad*, San José esquina á Amistad. 30-24f**


# AVISO.

Se hace saber, que por eleccion de los acreedores de D. Miguel S. Pardo, con la aprobacion del Sr. Juez, el que suscribe se halla en posesion como Síndico de todas las pertenencias y bienes de la quiebra de dicho señor con las atribuciones que le confiere el artículo 1073 del Código de Comercio, entre ellas las de recaudar y cobrar todos los créditos á favor de la masa; ejercitar las acciones de retroaccion sobre bienes que le pertenezcan aunque no se hayan entregado y defender en todos conceptos los derechos de la quiebra. En tal virtud el que suscribe es la única persona á quien lejítimamente deben pagarse los créditos del deudor incluso los que este haya negociado á sus dependientes ó á otras personas en los quince dias útiles anteriores al diez de diciembre último, fecha de la declaracion de la quiebra por deudas ú obligaciones cuyo vencimiento fuese posterior, y los negociados seis meses antes de dicha declaracion de quiebra por recibo de dinero que no conste por escritura pública dando fé de la entrega el Escribano; pues á los que se encuentran en estos dos últimos casos se les suplica no paguen las cantidades para evitarse los perjuicios de una doble paga mientras por el señor Juez no se determina lo correspondiente á su retroaccion que se establecerá en tiempo y forma. Habana 18 de febrero de 1878.—El Síndico de la quiebra, de D. Miguel S. Pardo, *Demétrio Fontanals.* 15bp19f

## CRONICA RELIGIOSA.

JUEVES.—Santo Tomás de Aquino, confesor y doctor.—Fué luz de la iglesia católica, ornamento y gloria de la sagrada órden de los predicadores. Fue hijo de los ilustrísimos condes de Aquino. Su padre se llamó Landulfo, y su madre Teodora.

Estando esta señora embaraza de Santo Tomás, vino á ella un ermitaño varon santo, que traia al cuello una pequeña imágen de Ntra. Señora, y á sus sagrados pies un retrato de Santo Domingo, y le dijo que Dios le alumbraria, y pariria un nijo, que se vestiria de aquel hábito de Santo Domingo y seria honra de su linaje y lumbrera del mundo. Oido esto, Teodora respondió: Hágase la voluntad del Señor. En haciendo el niño, le recibirán sus padres, como dado la mano de Dios. Llamáronle Tomás en el bautismo por su abuelo paterno, que fué el conde Tomás de Samacolta, muy privado del emperador Federico, el segundo, y su capitan general en muchas empresas.

Queriendo una vez el ama que le criaba empañarle, halló que el niño tenia apretado en la mano un papelito; y queriendoselo quitar para envolverlo mejor, lloró tanto el niño que le hubo de dejar, y despues su madre sacándole la mano, desenvolvióle, halló en él escrito: Ave María.

FIESTAS EL VIERNES.

Misas cantadas.—En Belen, la del Sacramento á las 8 en la Catedral la de Tercia á las ocho y cuarto en el Espíritu Santo al Señor de la Coronacion: en el Santo Cristo al Señor del Buen Viaje, en Santo Domingo de Guanabacoa, al Señor del Potosí en San Felipe, á Ntra. Señora de las Angustias: en Paula al Santo Patrono á las 7.

Via-Crucis.—En todas las iglesias conforme se ha publicado á la hora de costumbre. En San Francisco despues del sermon, por la tarde dentro del templo para las señoras, y sermon de Cuaresma en el Santo Angel.

Córte de María.—Dia 8. Corresponde visitar á Nuestra Señora la Purísima Concepcion en San Francisco de esta y en el de Guanabacoa.

## *Santo Angel.*

El viérnes 8 del actual, á las 9 de la mañana, se celebra en esta iglesia la fiesta anual al glorioso San Juan de Dios, con sermon y salve en su víspera.

Lo que se avisa para conocimiento de los fieles.

## Iglesia de Belen.

Los ejercicios del Triduo de Carnaval tendrán lugar en los dias 3, 4 y 5 de marzo á las 7 y media de la mañana, con sermon en la misa cantada.

Los sermones de Cuaresma tendrán lugar el miércoles de ceniza, y todos los domingos y viérnes á las 8 de la mañana.

Los ejercicios espirituales que empezaran la 4.ª dominica de Cuaresma, serán al anochecer.

Los viérnes despues de la misa cantada, tendrá lugar el ejercicio del *Via-Crusis.* 6-2 M.

*Predicarán en Santo Domingo de Guanabacoa.*

| | | |
|---|---|---|
| Marzo | 1.º | P. Galtés. |
| Id. | 17 | P. Sors. |
| Id. | 24 | P. Muntadas. |
| Id. | 31 | P. Sors. |
| Abril | 7 | P. Sors. |
| Id. | 14 | P. Galtés. |
| Id. | 18 | P. Muntadas. |
| Id. | 18 | P. Galtés. |
| Id. | 21 | P. Sors. 60-2 M. |

*Santa Cuaresma en la parroquia del Espíritu Santo.*

En los dias 3, 4 y 5 de marzo estará S. D. M. expuesta. En la misa solemne habrá sermon, y por la tarde despues de los ejercicios de costumbre, plática.

El miércoles despues de la imposicion de la Santa Ceniza, habrá sermon.

En toda la cuaresma habrá sermon los miércoles, viernes y domingos despues del Santo Rosario y Via-Crucis; y los demás dias plática doctrinal.

El sábado 9 de marzo, despues de la misa de doce, empiezan los ejercicios de preparacion para el Cumplimiento Pascual de los pobres pordioseros, con enseñanza de la doctrina y sermon durante ocho dias. El siguiente sábado será la confesion, y el domingo 17 con licencia del Muy ilustre Sr. Vicario Capitular cumplirán con el precepto Pascual en comunion general, dedicándose en ese dia por vez primera al culto una bellísima imágen del Corazon de Jesús que tanto amó á los pobres.

El Domingo Tercero de Cuaresma empiezan los ejercicios de preparacion de los niños de la Catequisis para la Comunion Pascual, que tendrá lugar el cuarto domingo de Cuaresma; y á la cual espera el Sr. Cura asistan los colegios de la parroquia, dando hoy como en años anteriores los dignos directores una prueva más de que la instruccion y educacion que se dá en sus colegios es eminentemente cristiana y práctica. 6-6 M.


**E. P. D.**

Los Sres. Sacerdotes que quieran aplicar el Santo Sacrificio de la misa con responso al final por el eterno descanso del alma, del que fué D. José Misa Besada, podrán concurrir el juéves 7 del corriente, de 6 á 9 de la mañana á la iglesia de las Ursulinas, donde recibirán la limosna de tres pesos billetes.

Habana y marzo 4 de 1878. 3-4 M.


## Observatorio Físico Meteorológico de la Habana en la Escuela Profesional

DE LA ISLA DE CUBA.

*Observaciones del dia 23 de febrero de 1878.*

| ABREVIATURAS: h, al horizonte; z, en la region cenital; i, zona intertropical; l, movimiento lento; r, rápido; f, dudoso. | HORAS DE LA MAÑANA. 6 | 10 | LA TARDE. 2 | 6 |
|---|---|---|---|---|
| Barómetro reducido | 756 72 | 757 97 | 756 03 | 756 75 |
| Termómetro centígrado | 25 00 | 28 20 | 29 20 | 28 40 |
| Tension del vapor de agua | 19 02 | 19 10 | 24 21 | 19 35 |
| Humedad relativa | 85 00 | 60 00 | 80 00 | 60 00 |
| Descenso del almidómetro, evaporacion | 2 20 | 0 00 | 2 90 | 0 10 |
| Ascenso del pluviómetro | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Viento.—Direccion | S | SO | S | S |
| Velocidad en met. por l. | 3 18 | 4 26 | 5 81 | 3 36 |
| Met. á la hora de la ob. | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Nimbus | ..... | ..... | ..... | lloviz |
| Fracto-cúmulus | s r 3 | s r 6 | s r | n 4 |
| Cúmulus | s l 1 | ..... | l 1 | ..... |
| Stratus | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Cúmulo-stratus | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Pallio-cúmulus | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Cirro-cúmulus | so l h | so l 0 | so l 2 | ..... |
| Cirro-stratus | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Cirru-pallium | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Cirrus | ..... | ..... | so l 5 | ..... |
| Nébula excelsa | ..... | ..... | ..... | ..... |
| Total de nublados | 1 | 16 | 12 | 14 |

OBSERVACIONES ACCIDENTALES.

Hubo a noche relampagos.

RASTRO DE GANADO MAYOR.

Movimiento de consumo en este dia, precios arrobas y existencia.

| Ganado. | Nº de reses. | Arrobas. | Precios. | Sobrantes para mañana |
|---|---|---|---|---|
| Toros | 51 | 918 | á 90 rs. | 99 |
| Nov. tejano | 33 | 510 | á 80 — | — |
| Bueyes | 34 | 680 | 65 á 70 | — |
| Terneros | 57 | 304 | 90 á 95 | — |
| Total | 175 | 2332 | | 99 |

PRECIOS PARA VENDER EN LAS CASILLAS PÚBLICAS.

| | | | |
|---|---|---|---|
| Toro del país | Masa | á 55 cs. | lb. — |
| | Filete | á 70 | — |
| | Con hueso | á 35 | — |
| Novillo tejano | Masa | á 50 | — |
| | Filete | á 70 | — |
| | Con hueso | á 35 | — |
| Buey | Masa | á 50 | — |
| | Filete | á 70 | — |
| | Con hueso | á 35 | — |
| Ternera | Masa | á 60 | — |
| | Filete | á 70 | — |
| | Con hueso | á 35 | — |

RASTRO DE GANADO MENOR.

Movimiento de consumos en este dia, precio, arrobas y existencia.

| Beneficiado | Clases. Mat. | Clases. Car. | Total | Peso. @ | Peso. lb. | Precios | Sobrantes. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Cerdos | 32 | 94 | 122 | 365 | — | M. á 100 | 76 |
| Carneros | — | — | 35 | 49 | — | C. á 110 | — |
| Chivos | | | 8 | 10 | — | 100 á 110 | 15 |

PRECIOS Á QUE HAN DE VENDER LAS CASILLAS PÚBLICAS.

| | | |
|---|---|---|
| Manteca | á 35 cts. | libra. |
| Masa | á 70 | — |
| Costillas | á 70 | — |
| Carnero | á 50 | — |
| Chivo | á 50 | — |

Habana 5 de Marzo de 1878.—El Administrador, Guillermo de Erro.

## ORDEN DE LA PLAZA DEL DIA 6.

SERVICIO PARA EL 7.

Jefe de dia: D. Ricardo Morales, Comandante tercer jefe del Batallon de Paradá.

Parada: Primer batallon de voluntarios.

Castillo del Príncipe: Batallon Depósito de Instruccion.

Cuartel mento de idem: Deposito de Transeuntes Fuerte número 4: Batallon Depósito de Instruccion.

Guardia del Cuartel de Madera: Compañía del Príncipe.

Idem del Castillo de Atarés: Batallon Depósito de Instruccion.

Idem del Castillo de la Punta: Batallon de Paradá.

Idem de la batería de la Reina: Regimiento de Artillería á Pie de Ejército.

Reten en el Cuartel del Regimiento de Caballería de Voluntarios: 2.º Escuadron del mismo.

Patrullas en Jesús del Monte y guardia del Castillo de Atarés: 1.ª Compañía del mismo barrio.

Hospital D. Francisco Lugo García, capitan de Artillería á Pié.

El Coronel Sargento Mayor.—Recaño.

## COMUNICADOS.

CIRCULO DE HACENDADOS.

En un suelto que publica el *Diario de la Marina* en su número correspondiente al domingo 3 del actual recordando que para ese dia debia celebrarse la reunion general de propietarios convocada con el objeto de fijar las bases ó estatutos que definitivamente han de establecerse para el réjimen y gobierno del Círculo de Hacendados de la isla de Cuba, dice el señor Director de aquel periódico, con un tono magistral que nos obliga á contestarle, que segun tiene entendido, los nuevos estatutos se presentan tan simplificados y sin las involucraciones del primitivo proyecto, que las apreciaciones que de esto habia hecho, vienen ahora á verse confirmadas.

Si como lo suponemos, el autor del escrito es el mismo señor Director, que en la reunion del Círculo de Hacendados, fué el primero que tomó la palabra al abrirse la discusion sobre los estatutos que acababan de leerse, es preciso convenir en que, si poco feliz estuvo en aquella ocasion, ménos lo ha estado ahora. Allí dijo con sorprendente lijereza que no sabia si aquella empresa era anónima ó comanditaria, que debia fijarse la clase á que pertenecia, como lo mandaba el Código, que era preciso estudiar mucho la cuestion, porque se trataba del empleo de inmensos capitales y otras cosas tan ajenas como todas esas, al asunto de que se estaba tratando. Y así fué que vimos perfectamente, no solo la necesidad que se tuvo de enterar de nuevo al orador de todo lo que se habia leido, y de tal manera lo hicieron los señores que usaron de la palabra, que el mismo señor Director del *Diario* convino en que no se habia enterado bien por una sola lectura del proyecto, retiró cuanto habia manifestado y acordó con todos la aceptacion del citado proyecto y si no recordamos mal, hasta dió las gracias á los que le habian sacado de su error. Eso fué lo que pasó en presencia de cien personas, y lo que despues ha comprobado el mismo *Diario de la Marina* que publicó aquel primitivo proyecto de estatutos y no hizo las apreciaciones de que ahora se jacta; y á la verdad que hizo bien en no repetir en público lo que en privado habia manifestado en la Junta.

Esto, en cuanto á las apreciaciones de que habla, que respecto de la recomendacion de los nuevos estatutos, como más simplificados que los primitivos, porque carecen de las involucraciones que los otros introducian en capítulos agenos á las bases y régimen administrativo de la sociedad, como lo eran los concernientes á los ingenios centrales, á la escuela de agricultura y á las &c. &c. que prodiga el soltero de que hablamos, diremos dos palabras más.

Sépase, como se puede ver en el primitivo proyecto de estatutos, que ni allí se imponian como atribuciones del círculo, los ingenios centrales, ni los estatutos los reglamentaban. Lo que se hacia era recomendar su conveniencia á los hacendados y fuera de ellos se presentaba una fórmula de proyecto de contrato para ese género de empresas ó sociedades á los que quieran acometerlas.

Tampoco contenian los estatutos los reglamentos de la escuela de agricultura, y en resúmen aparece que las nuevas bases son precisamente las mismas del primitivo proyecto, sin más variacion que la que se les hace en su forma y en la terminología científica.

Bueno es que en lo relativo al Círculo de Hacendados, se consigne lo que en verdad ha ido sucediendo para llegar á su organizacion, y por eso queremos que conste, no sólo lo que cada uno ha trabajado, sino el más ó ménos acierto con que vaya hecho y el género de veracidad con que se ha producido, para que nadie se atribuya glorias, que si las hay, serán para el país que consiga su objeto con aquella salvadora institucion.


# CIRCO METROPOLITANO.

Grande, extraordinaria y variadísima funcion para

## EL JUEVES 7,

GRANDES NOVEDADES,
NUEVAS SENSACIONES.

Beneficio del gran ecuestre

## M. C. W. FISH.

Nueva y divertida pantomima *Los Brigantes.* Nuevas pruebas de fuerza por la Srta. VILLAFÉZ. Difíciles y vistosos ejercicios de equilibrios en el alambre flojo por Mlle. VICTORINE. Nuevos trabajos ecuestres por LA JOVEN BRASILEÑA. Sorprendentes trabajos ecuestres y dobles saltos mortales por Mr. FRANK CODNER. Nuevos juegos de salon y ejercicios en la barra horizontal por los hermanos LIVINGSTON y JHON MURTZ. Humorísticos entretenimientos cómicos por los hermanos KENEBELS, PICO y ROMERO. Mr. MURRAY con su bien amaestrado caballo en libertad *Eagle.* Por último, el beneficiado **M. C. W. Fish** en sus trabajos sobre caballo en pelo.—Conque al Circo el juéves, que es *¡la mar!* 1bp6m

## EL JUEVES 7 DE MARZO

TENDRA LUGAR EN EL

# PABELLON RUSO

el beneficio del niño

## DANIEL FEELEY

campeon invencible del arte que profesa,

POR EL CUAL RESPONDEN LOS EMPRESARIOS

## APOSTANDO DE 500 Á 1000 PESOS ORO

á que no se presenta ningun otro artista de sus condiciones; que sea tan general y perfecto en toda clase de egercicios gimnásticos y que egecute como él en una sola noche el número de distintos trabajos que vá á ofr

## ALQUILERES DE CASAS.

Se alquila en proporcion la casa calle de Revillagigedo 83, con entrada de carruaje, buena sala, cuatro habitaciones, comedor, buen patio, algibe, traspatio, caballerza y azotea. En la panadería está la llave, y en la calle de la Amargura 43, esquina á la del Aguacate, impondrán. 8-20f

Se alquilan en la calle de Mercaderes n.° 35, entre Amargura y Plaza Vieja, una hermosa sala y cuatro espaciosos cuartos, todo muy ventilado y propio para escritorios. Impondrán en la misma casa. 30 17f

## SE ALQUILAN

dos casas calle de Romay esquina á San Ramon; acabadas de construir con todas comodidades. 8 2m

Se alquilan cuatro grandes cuartos juntos incluso su cocina gran patio y llave de agua para matrimonio ó familia corta de moralidad por ser matrimonio el que alquila) todo en 35 pesos papel.—San Rafael 73. 6-22f.

## SE ALQUILAN.

Un hermoso salon ventilado y apropósito para escritorio, con balcon corrido á la calle, entrada libre á todas horas y unos espaciosos entresuelos que reunen las mismas condiciones.—Teniente Rey, 33. 22f.

Se alquila en Jesus del Monte, calle de Correa ó Mango, la casa núm. 58, de portal, buena sala, zaguan, seis cuartos con sus alacenas, cocinas, patio, traspatio y pozo. 4-26f

Se alquilan las casas calle de Cuba números nueve y noventa y dos entre Teniente-Rey y Muralla, propias para el comercio.—Informes en la del Obispo núm. 37, entre Cuba y San Ignacio 8-19pF

## VENTAS DE FINCAS

Y OTROS ESTABLECIMIENTOS.

## BUEN NEGOCIO.

Se vende, por no poderlo asistir su dueño, el establecimiento **MODELO** y almacen de forraje, Amistad 124, entre Barcelona y Dragones.

En el mismo se hallan de venta dos magníficas parejas de caballos, de 7 cuartas de alzada, color bayo de vela y moro empedrado, llegadas por el vapor inglés de las colonias de Méjico. Son muy bonitas y de mucha conduccion, al mismo tiempo que muy dóciles, pues un nino las puede gobernar perfectamente. Son maestras de coche y de monta.

Tambien se vende una VICTORIA de poco uso con sus excelentes arreos de pareja y un magnífico caballo americano de monta. Del precio y demás pormenores, informaran en dicho establecimiento de los Sres. R. Martinez y C.ª, Teniente-Rey 12. 8 2m

## SE VENDE

el Establecimiento de Camiseria y Sastrería Obispo 43, al lado de la tienda El Angel: en el mismo su dueño informará. 8 2m

## EXCELENTE NEGOCIO.

Se vende un gran establecimiento mixto en el campo con grandes ventajas por no poderlo asistir su dueño. Informarán los Sres. Fargas, Gili y C.ª, Oficios 28. 15 1m

Se venden los barracones que sirvieron para depósito de asiáticos situados en el Cerro, calle Zanja esquina á la calle de Cuba n. 98, ó en la de LA ALIANZA. 15-20f

## ALQUILERES DE CRIADOS.

Se alquilan dos tinas lisas y apisonadoras. Y tambien un pianino magnífico.—Reina 101 esquina á Campanario. 5-22.

Un negro, generalísimo cocinero, se alquila en $50 billetes. Podrá verse, Chacon 25, de 8 á 10 de la mañana. En la misma se alquila una hermosa casa propia para hotel, colegio ó una larga familia; se vende otra casa en $9,000 en oro, en pacto, y se dan $4,000 en oro de un menor al 1 por 100. 4 6mz

Se alquila una criada muy humilde, entondida y dispuesta. Calle de la Amargura n.° 63, esquina á la Acacia, impondrán. 4 16f

## PERDIDAS.

Se ha extraviado una cartera, en la noche del 5 del corriente mes, desde el teatro de Tacon á la esquina de la del Obispo y Bernaza y entre otras papeletas una cédula de vecindad á favor de D. Manuel Pelaez y Valle, se le suplica á la persona que se la haya encontrado, la entregue calle de Bernaza núm. 5 donde será gratificada generosamente. 4p7m.

Habiendo desaparecido el dia 20 del presente mes un LORO, se suplica á la persona que lo haya encontrado, se sirva entregarlo en la calle de la Obrapia n. 3, donde se le gratificará. 4-27f

## VENTAS DE CARRUAJES.

Se vende un coupé de uso, pero en buen estado y sólido: se da barato por lo necesitarlo. Compostela 160. 8 12e

En la calzada de la Reina n.° 63, se vende un tren Lyen completo á la Poumont. De las diez de la mañana en adelante tratarán. 3-26f

## VENTA DE ANIMALES.

## PARA LOS CARNAVALES.

En el Cuartel de Dragones se hallan de venta un caballo criollo de 7 cuartas y 7 dedos y una magnífica yegua americana. 15-26f

*PARA EL CARNAVAL!*

Se vende un precioso y arrogante caballo americano, moro azul, de seis años y maestro de coche solo y en pareja. Informarán Prado 29, de once á cinco de la tarde. 5-27f

Se venden dos caballos, uno de siete cuartas, de 4 años, propio para montar; otro de 6½ cuartas de monta y tiro. Obrapia 61, se pueden ver. 8 27f

## CRIADOS HUIDOS.

En dia 21 de diciembre del pasado año se ha fugado de la casa de su amo D. José Hevia, calle Capitanar n° 31, Bejucal, la morena María Regla, criolla, de 33 años de edad, alta, colorada, le faltan los dientes de la encia de arriba. La persona que diese razon de su paradero, será gratificada con 34 pesos, papel, y el que la abrigue será responsable á lo que hubiere lugar. 4 2m

## DROGUERIAS Y PERFUMERIAS.

## BOTICA

DE

## SANTA ANA.

*Muralla 66 y 68.—Habana.*

Consultas médicas grátis, todos los dias de 11 á 1 de la la tarde y de 3 á 10 de la noche.

## ESENCIA CONCENTRADA

DE

## ZARZAPARRILLA DE HERNANDEZ.

Las curaciones que diariamente se obtienen con ese gran purificador del cuerpo humano, en enfermos aburridos y ya sin esperanza de recobrar la salud, por haber usado sin éxito los depurativos más recomendados, han comprendido que es el único remedio para la pronta y radical duracion de los HERPES, REUMATISMO, DOLORES DE HUESOS, SÍFILIS, MANCHAS y ULCERAS y de toda enfermedad que dependa de la impureza de la sangre.

Para males ménos graves es un precioso temperante: excita el apetito y muchos lo usan en aquellas indisposiciones en que el cuerpo no se encuentra ágil, principalmente los sugetos que han padecido venéreo y otros males.

Depósito: botica de Santa Ana, Muralla 66 y 68.

**Polvos anti-helmínticos purgantes para la destruccion de**

## LAS LOMBRICES.

Los niños los toman fácilmente con cualquier líquido, alimento ó dulce, y en caso de no tener lombrices los purgan y fortifican sus estómagos, de manera, que de flacos y desganados, con este purgante apropósito para ellos recobran la salud y el apetito y se ponen risueños y hermosos.

Debe tenerse presente que las lombrices son causa de gran mortandad en los niños.

Nota.—Cuidado con las imitaciones: no serán legítimos Hernandez los polvos que en la etiqueta de la casa (lease bien), no diga botica de Santa Ana, Muralla 66 y 68.

*PASTA BALSÁMICA.*

Para la pronta y segura curacion de las GONORREAS, AFECCIONES DE LA VEJIGA y RIÑONES, evitando las funestas consecuencias que tantas víctimas causan dichas dolencias. En las GONORREAS rebeldes usese á la vez la INYECCION BALSÁMICA cicatrizante. Botica de Santa Ana, Muralla 66 y 68.

*AGUA CICATRIZANTE.*

Cura y completa la cicatrizacion de toda úlcera ó llaga, ya abierta, sea reciente ó antigua, en las piernas dentro de la nariz y sobre todo en las partes genitales, como chanchos, llagas ó úlceras vénereas de toda especie. En estos dos casos se usa la Zarzaparrilla de Hernandez y las píldoras antibiliosas.

*PÍLDORAS ANTIBILIOSAS.*

El mejor purgante para estos climas, especial para las enfermedades del hígado y en el extreñimiento. Botica Santa Ana, Muralla 66 y 68.

*BÁLSAMO SEDANTE.*

Cura toda clase de dolores, con especialidad el reumatismo, y usando al propio tiempo al interior la Zarzaparrilla de Hernandez y las píldoras purgantes antibiliosas se consiguen curaciones inesperadas. Muralla 66 y 68, farmácia.

*PURGANTE Y VOMI-PURGANTE*

## LE ROY.

Llamamos la atencion sobre esas medicinas, las que preparadas con drogas escogidas, hacen que su accion purgante sea segura, aun á las naturalezas más resistentes; de ahí los buenos resultados y sorprendentes curaciones que diariamente se obtienen con este purgante LE ROY. Depósito: botica Santa Ana, Ricla 66 y 68.

*ACEITE DE HÍGADO DE BACALAO,*

respondiendo á su pureza, el que se expende con el nombre de la botica Santa Ana, podríamos citar varias curaciones difíciles conseguidas con este aceite en las diferentes enfermedades en que está indicado. El de autores conocidos como JONGH, MOGG, en pomos triangulares, y demás autores, garantizamos su legitimidad. Depósito: botica Santa Ana, Ricla 66 y 68.

Se hallarán de venta estos medicamentos en la botica de Melena del Sur y demás de la Isla. 30 6mz

*Aguas minerales de la Isla de Pinos.—Remitidas por D. Angel García Ceballos de*

## SANTA FÉ.

Las hay de Hierro Yermas y Magnesio.—Unico depósito «Café Barcelona» Monte esquina á Egido. 15-21f

## GLICEROLADO ANTI-EFÉLICO CON SULFOFENATO DE ZINC,

Preparado por E. Palú,

*FARMACEUTICO DE PARIS.*

Este nuevo medicamento se usa con gran ventaja para combatir los efélides (vulgo pecas) las manchas de la cara debidas al embarazo, y tambien en ciertas enfermedades de la piel, tales como dartros furfuráceos, así como ciertas erupciones producidas por la acidez del sudor.—Su uso es completamente inofensivo y tiene la ventaja de desaparecer fácilmente por el lavado.

Depósitos principales.—Habana: Botica Francesa, San Rafael 92, esquina á Campanario; botica de San José, Aguiar 105; droguería Sarrá y C.ª; droguería La Central; Ninfas Habaneras, peluquería de Mr. Martinó, Obispo 94. Guanabacoa: Farmacia de San Francisco, de D. Juan Romero, calle de la Concepcion núm. 43. 15 10fb

## NINFAS HABANERAS.

## PELUQUERÍA DE MR. MARTINÓ.

## OBISPO N. 94,

entre Bernaza y Villegas.

## PARA EL CARNAVAL.

**Collares** de cuentas doradas por dentro, nunca cambian de color. Pulceras de cintas doradas, idem de 7 aros, idem de campanillas. **Cintillos** enchapados, dorados y calados, con cintas, para niñas: con esos cintillos no necesitan peinetas. Peinetas filigrana caladas, lisas y carey. Juegos de peinetas negras y carey. **Letras grandes de plata** y enchapadas de oro. **Prendedores** para mantilla de acero, dorados y *Clair de Luna*, á $2 y 2-50. Ganchos invisibles y dorados. Clavos dorados negros y carey de varias formas. **Ondeados para la frente y redecillas de cabello** para la frente: con esas redecillas no se levanta un cabello por fuerte que sea el viento: son indispensables para los peinados del dia. Acabo de recibir un gran surtido de **Castañas ondulé.** Crespos ondeados y lisos, bucles, rizos, diademas. **Trenzas grandes** de $15 á $100. **Pelucas blancas** para señoras y caballeros. **Polvos de oro, brillante y rubios**, blancos y coloretes de todas clases. Oreoline para poner el cabello rubio. **Lapiz** para las cejas. **Flores** y lazos de terciopelo. **Plumas y marabús** de todos colores. **Las muñecas** peinadas de blanco y rubias y empolvadas de oro y brillante.—*Se reciben órdenes para peinar señoras, ya sean peinados á la antigua ó á la moderna.*—Se hacen pelucas para cocheros iguales á los figurines. Cabello de todos colores, cano, rubio, castaño y negro, colorado y gris, más barato y mejor que nadie. 15 22f

EN LA CALLE DE OBRAPIA N. 54, Y A DOMICILIO SE ADMINISTRA.

## VACUNA DIRECTA DE LA VACA.

TODOS LOS DÍAS DE ONCE Á UNA DE LA TARDE. SE FACILITA VACUNA TODOS LOS DIAS Á CUALQUIER HORA. m8-1-F

## CAFE NERVINO MEDICINAL.

MARAVILLOSO SECRETO ARABE. DEL DR. MORALES.

MARAVILLOSO SECRETO ARABE.

## EXCLUSIVO DEL DOCTOR MORALES.

Recomendado y elojiado por DOSCIENTOS PERIODICOS.

*Extraordinaria aceptacion en todas las clases sociales.*

**¡¡71000 CAJAS VENDIDAS EN EL PRIMER AÑO!!**

*Su orijen.*—En 1859 durante la guerra de España con el Imperio de Marruecos, hallábase gravemente enfermo en uno de los hospitales de Tetuán el hebreo *Adam Perath*. Profundamente reconocido á los cuidados y favores que el Doctor MORALES le habia prodigado, y deseando darle una prueba de su sincero agradecimiento, le comunicó el SECRETO de una composicion de sustancias vejetales, revelada en premio de su asidua asistencia por un médico árabe, que murió en Africa despues de obtener—merced á dicha composicion—alta reputacion y ríquezas resultados.

*Resultados obtenidos por el Dr. Morales.*—He usado esta composicion, preparada segun las instrucciones comunicadas por el médico árabe como SECRETO y remedio heróico, en infinitos casos de mi práctica particular, que puedo citar, sin hablar del hecho del dominio público hasta adquirir la más firme y completa conviccion de que sus resultados confirman la eficacia y correspondian á los elogios que de ella hacia el hebreo, poco tiempo ántes de sucumbir, víctima de la disenteria.

Adquirida esa firme conviccion, en 1875 me he atrevido á ofrecer, al público en general y á la clase médica en particular, mi *CAFE NERVINO MEDICINAL*, para que confiando en su buen exito, lo empleasen en las diferentes afecciones del aparato gástrico y sistema cerebro-espinal, persuadido de que con su uso alcanzarian triunfos que no habrian podido obtener con otros medicamentos.

Mis esperanzas no fueron defraudadas, El *CAFE NERVINO MEDICINAL* tuvo una aceptacion extraordinaria. Numerosos certificados de particulares, médicos y farmacéuticos, que conservo en mi poder á disposicion de cuantas personas quieran examinarlos, hacen constar curaciones de enfermedades juzgadas INCURABLES. Mas de DOSCIENTOS PERIÓDICOS, nacionales y extranjeros han tributado honrosos elojios á tan prodijioso especifico, cuya fama es hoy tanta que, aun de las naciones donde no tengo depósitos, se me hacen pedidos para combatir las enfermedades más rebeldes.

El número de 71.000 CAJAS VENDIDAS EN EL PRIMER AÑO es la mejor recomendacion de mi *CAFE NERVINO MEDICINAL*.—Es admirable su efecto para toda clase de DOLOR DE CABEZA, desde el más leve hasta la JAQUECA más fuerte y tenaz, bastando de ordinario una taza para hacer desaparecer, casi instantáneamente, tan molesto mal y poder dedicarse á las tareas de costumbre.

Es así mismo sorprendente su accion para toda clase de intermitentes, accidentes, conjestiones cerebrales, parálisis, vahidos, debilidad muscular ó nerviosa, general ó local, malas digestiones, vómitos, acedías, inapetencia, ardores, flatos, histerismo, exceso de bilis, extreñimiento y demás trastornos del aparato gastro-intestinal.

Reemplaza con ventaja á todos los tónicos y neurosténicos reconstituyentes, porque elevando y regularizando altamente las fuerzas gástricas, hace desear y permite tomar más cantidad de alimentos que de ordinario, asimilándolos todos por las fáciles digestiones que se producen, y curando por su accion tónica, superior á todas, la ANEMIA, CLOROSIS, HIDROPESÍAS, DIABETES, ESCRÓFULAS, RAQUITISMO y toda otra afeccion que recordosca por causa la pobreza ó alteracion de la sangre.

Es indispensable para las personas predispuestas ó que hayan padecido congestiones ó apoplegias cerebrales, para los que se dedican á trabajos intelectuales para los convalecientes, para los militares en campaña y para cuantas personas quieran conservarse en buen estado de salud y frescura natural, consiguiente á tal estado.

Tanto por sus propiedades, altamente higiénicas y profilácticas, cuanto por su grato sabor, no produce irritacion, la que por el contrario hace desaparecer, si existe, debe siempre usarse, aun en el mejor estado de salud y con preferencia al café comun, sobre todo los niños, para su buen desarrollo, y las señoras para verse libres de muchas molestias propias de su sexo y debidas á la exajeracion de su sistema nervioso.

MODO DE USARLO.—Puede verse en el PROSPECTO que acompaña á cada caja, el que se remite GRATIS á quien lo pida.

SU EXPENDIO.—Se halla de venta al precio de 1 peso oro, y 1 50 en cajas para 20 y 40 tazas respectivamente, en las PRINCIPALES FARMACIAS Y DROGUERIAS DE LA ISLA.—En el DEPOSITO CENTRAL: botica de **Santo Domingo**, Obispo 27, y en la botica de *San José*, de Ramos Cruzado, Aguiar 106, esquina á Lamparilla.

DEPOSITO GENERAL.

*Doctor Morales.—ESPOZ Y MINA, Madrid.*

## PASTA PECTORAL DEL DR. ANDREU DE BARCELONA.

REMEDIO SEGURO Y EFICAZ CONTRA TODA CLASE DE TOS, POR FUERTE EINCOMODA QUE SEA.

Clasificacion de las virtudes de esta PASTA en las principales variedades que presenta aquella enfermedad.

**LA TOS** Ronca y fatigosa, que es síntoma casi siempre de tisis y de catarros pulmonares disminuye muchísimo con este medicamento, rebajando por completo los accesos violentos de tos, que contribuyen en gran parte al decaimiento del enfermo.

**LA TOS** Ferina ó de coqueluche, que ataca con tanta pertinacia á los niños, causándoles vómitos, desganos y hasta esputes sanguíneos, se cura con esta pasta, y más si se le acompaña algun cocimiento y analéptico.

**LA TOS** Seca, convulsiva, entrecortada por sofocacion, que padecen los asmáticos y personas excesivamente nerviosas, por efecto á veces de una gran debilidad, se combate perfectamente á las primeras tomas de esta pasta.

**LA TOS** Continua y pertinaz producida por un gran cosquilleo en la garganta, á veces acompañada de ráctor herpético, se corrije instantáneamente con esta pasta, y desaparece luego con el auxilio de un buen depurativo.

**LA TOS** catarral ó de constipado y la llamada vulgarmente de sangre, sea reciente ó crónica, se cura siempre con este precioso medicamento. Muchísimas personas han curado con él una de esas tos esgantiguas, tan incómodas y pertinaces, que el menor resfriado se reproducen de una manera insoportable.

Este gran medicamento, es, pues, siempre seguro para combatir y curar la terrible enfermedad de la toz, de cuyos funestos resultados se ven diariamente ejemplos.

**ALIVIO Y CURACION DEL ASMA.**

POR LOS CIGARRILLOS BALSAMICOS Y LOS PAPELES AZOADOS, DEL MISMO AUTOR, remedio pronto y seguro que penetra directamente en forma de HUMO dentro del aparato respiratorio.

Fumando un solo cigarrillo aun en los ataques más fuertes de ASMA, se siente al instante un gran alivio. La espectoracion se produce más fácilmente, la tos se alivia, el pecho late con más regularidad y el enfermo respira luego libremente.

Estos cigarrillos llevan una boquilla tan cómoda, que no ensucia los dedos y se aspira el humo con extraordinaria suavidad, pudiendo fumarlos las señoras y personas más delicadas.

**LOS ATAQUES DE ASMA** por la noche se calman al instante con los papeles azoados, quemando uno dentro de la habitacion; de modo que el enfermo que se ve privado de descansar, siente luego un agrada ble bienestar que se convierte en la más apacible sueño.

Depósitos de todos estos medicamentos, Botica y Droguería La Reunion, de Sarrá y Comp., Teniente-Rey 41 y botica de Santo Domingo, Obispo 27. 4ám 1 1en

## ESTABLECIMIENTO HIDROTERÁPICO DEL DR. BELOT,

## CALLE DEL PRADO 67 Y 69.

**Bajo la direccion de los Dres. Belot y Montané.**

Tratamiento de las enfermedades del pecho, de los aparatos gastro-intestinal, génito-urinario y locomotor, de la anemia, de la escrófula, las enfermedades nerviosas (epilepsia, histeria, San Vito, asma ó ahogo, tos nerviosa, &c.

La casa ofrece al público para el tratamiento de dichas enfermedades los medios siguientes:

**Duchas** generales, á temperatura natural y de agua fria (con hielo), ascendentes, escocesas, de semi-cupio (perineal, rectal, uterina, abdominal, lumbar), circular, de vapor y sulfurosa.

**Baños** de estufa, con ó sin ducha fria, de vapor simple ó aromatizado, eléctricos, sulfurosos (imitacion de San Diego y Madruga), de Bareges, alcalinos, mercuriales, iodo, emolientes, aromáticos, gelatinosos, &c.

**Fumigaciones** é inhalaciones para la nariz, la laringe y los bronquios.

*Nota.*—Siendo las enfermedades á que se aplica este tratamiento generalmente de larga duracion, absolutamente debe esperar el enfermo el alivio con solo cuatro ó cinco baños como muchos pretenden sin razon. 30 7f

## VINOS FRANCESES DE COSECHEROS.

Llamamos especialmente la atencion de los consumidores sobre estos vinos en BARRICAS que no han sido manipulados, ni han padecido la más ligera alteracion, recibiéndolos directamente de los

**Cosecheros.**

| | | |
|---|---|---|
| Médoc, escojido | año | 1873 |
| St. Emilion, escojido | año | 1873 |
| Médoc | año | 1874 |
| St. Emilion | año | 1874 |

Siempre hay un surtido de todos los VINOS de Burdeos en caja.—Dirijirse: á DUSSAQ y cp.

**TEJADILLO 7.**

## ¡FUSTES! ¡FUSTES!

La fábrica y depósito de estos, tanto de sillas y sillones de montar como de carretones, (de los Sres. Paz y Hnos), se trasladó á la calle Teniente-Rey núm. 44.—Alberto García y cp. bp30-2m

## RETRATOS DE PIO IX.

En tarjetas chicas á 50 cts. y en imperiales á $1 Las personas del interior de la isla, remitiendo su importe por el correo, se les enviará.

*Narciso Mestre.*

**19. O-REILLY 19,**

esquina á la calle de Aguiar. 6 17

## RELOJEROS.

¡¡BUEN NEGOCIO!!

Se vende con existencias ó sin ellas, la acreditada relojería de D. Guillermo de los Orcos, Obispo 67, entre Habana y Aguiar, el mejor punto y local para este giro.

AL PUBLICO.— REALIZACIOG.

Repeticiones á minutos, entre ellas hay una con todos los atributos de la música grabados, cronómetros y de toda clase de relojes. Sortijones de brillantes, botonaduras, dormilones, relicarios, etc.—Aprovechen la ganga que tiene que aun estará su dueño para atender á asuntos de más interés. 15-24f

## TEODORO RAMOS Y CRUZADO.

AGUIAR Y LAMPARILLA, HABANA.

BOTICA Y DROGUERIA DE

## SAN JOSÉ.

INSTRUMENTOS DE CIRUGIA.

## BRAGUEROS.

Tenemos un variado surtido de BRAGUEROS de diversos mecanismos, y nos hacemos cargo de su fabricacion con arreglo á medida.

**Jarabe anti-herpético** depurativo de la sangre y POMADA ANTIHERPÉTICA, preparados segun fórmula del Dr. D. Julio J. Le-Riverend. Eficacísimos en las enfermedades de la piel, como los *EMPEINES, HERPES* en todas sus formas, la *CASPA, SALPULLIDO, BARROS* y todas las afecciones que reconocen por causa la impureza de la sangre.

**Esencia de la vida.**

Restaura la viridad y el vigor de la juventud en poco tiempo, aun en las naturalezas más agotadas.

**Rejenerador del cabello**

Restablece y conserva el color natural del cabello, sin alteracion de la piel.

**ACEITE ARABIGO.**

Se usa á la vez que el **REGENERADOR del CABELLO** ó solo: previene la calvicie é impide la canicie.

DE COGOLLOS DE PINO

preparado segun fórmula del Dr. D. Julio J. Le-Riverend. Cura en poco tiempo los catarros recientes ó antiguos, las irritaciones del pecho y de la garganta y calma las toses más rebeldes: tambien es de suma eficacia en las irritaciones é inflamaciones de los riñones y de la vejiga.

**Tintura de Hamamelis.**

Recomendada en los dolores REUMATICOS, contusiones, quemaduras y otras diversas enfermedades.

NOTA.

Surtida esta casa de todo lo necesario para las FINCAS, dedica especial cuidado á esta clase de despacho; los Sres. HACENDADOS que nos confien sus pedidos, pueden estar seguros de la bondad de los medicamentos y de la modicidad en los precios. ms

**COSMETICO DE PEÑARANDA**

## PARA TEÑIR EL PELO.

Ningun cosmético se ha conocido que reuna las cualidades que el nuestro. Con otros es necesario que al aplicarlos haya que lavarse, y si la persona que lo necesita estuviese afluxionada ó con alguna indisposicion, no podrá emplearlo porque le perjudicaria, con este no hay necesidad del lavado, evitándose así los inconvenientes expresados.

Este tinte empleado para la **cabeza, patillas, bigotes y cejas**, es casi instantáneo su buen uso.

El modo de usarla se vera en el prospecto que acompaña á cada pomo.

**PASTA de Liquen Islandico.**

Remedio infalible para TOS, los CATARROS por enérjicos que sean, y para todas las enfermedades del PECHO.

*Aceite de almendras puro.*

*BOTICA DE SANTA CLARA.*

San Ignacio n. 44, esquina á Obrapia.

PREPARADO POR

## D. LUIS LE-RIVERAND.

SEGUN FORMULA DEL DOCTOR GAND L.

Este Jarabe de reconocida eficacia de la sangre tiene un poder cicatrizante incontestable, y calma muy pronto la tos, por rebelde que sea. Esta propiedad es de una importancia inapreciable, sobre todo, en la tisis pulmonar cuando viene acompañada de estos incomodos sintomas, que no dejan descansar á los pacientes.

El JARABE PECTORAL CUBANO, al quitarle la tos, les devuelve la calma, procurándoles el descanso necesario para alimentarse.

El JARABE PECTORAL CUBANO, unido á las píldoras de YODODRMO Ferranas, es una generosísima medicacion para curar la hemotisis, catarros crónicos y agudos, tisis pulmonar y laringea, incipientes, y en general todas las enfermedades del pecho.

**ESPECIALIDADES MEJICANAS.**

CURACION DEL ASMA Y AHOGO

Las pastillas anti asmáticas de Carbó muy conocidas que solo con aspirar el humo de una pastilla desaparecerá la sofocacion, una cajita 1 pesos 50 cts.

El licor anti-asmático de Carbó y el jarabe muy agradable calmante para la tos una botella 2 pesos 50 cts.

La mejor de todas las aguas para teñir el cabello es el Agua de la Reina.

La teñidura instantánea dura seis meses, la etiqueta esplica su uso, una cajita 2 pesos 50 cts.

El emplasto monopolis.

Curan las úlceras de toda clase, estando muy acreditado, una caja, 1 peso 50 cts.

El emplástico gomoso de Méjico hace desaparecer la inflaccion y los callos violentamente, una cajita 1 peso.

Depósito droguería Sarrá y Comp. Teniente-Rey 41, botica La Luz, Obispo 95, Santa Rita, Mercaderes y demás boticas de esta ciudad y de la Isla. m8 7mz.

## CASAS DE SALUD, HUÉSPEDES Y FONDAS.

## RESTAURANT Y FONDA AMBOS MUNDOS

SITUADA EN LA

*Calle de Egido, esquina á Corrales*

Este establecimiento se abrirá el viérnes 1.° del próximo marzo, donde encontrarán los que gusten favorecerlo, aseo, sazon, equidad en sus precios, y un buen local reservado para los que lo desean. 4-26f

## RESTAURANT EL ORIENTE,

**Lamparilla 26.**

CONVENIENCIA PUBLICA.

No perdonando medio alguno para que nuestros constantes favorecedores y el público en general puedan disfrutar todas las ventajas posibles, hemos acordado hacer una grande rebaja en los precios, segun podrán observar todos cuantos gusten favorecernos con su asistencia.

Tambien se admiten abonos fijos á precios convencionales, esperando del público no dejará defraudados los deseos de S. S., García H.° 7 24f

**SAN DIEGO DE LOS BAÑOS.**

Llegada la temporada de baños las personas que necesiten tomar tan benéficas aguas, pueden dirijirse á aquel pueblo seguras de que encontrarán alojamiento adecuado á sus recursos y posicion; pues hay establecimientos que á continuacion se expresan, clasificados por el gremio del modo siguiente:

HOTELES DE 1.ª CLASE.

GABANCHO—CABARROUY—BUSTAMANTE

HOTELES DE 2.ª CLASE.

QUINTANA—PEREZ—BARDINO.

FONDAS ó CASAS DE HUESPEDES.

MUNOZ Y CP.ª—GUTIERREZ.—EVORA.—GONZALEZ.—MELL 15-27f

## MISCELANEA.

## ¡EL BOULEVARD!

**ROPA EN GENERAL.**

*SASTRERIA Y CAMISERIA.*

## YA SE HIZO BALANCE POR MEDIDA.

FLUSES de casimir, merino, chaviot y muselina á 40, 45 y 50 $, flus completo.

PANTALONES de casimir á 12, 15 y 18 $.

FLUSES de dril de color, hilo, á 25 $.

FLUSES de elasticotin negro á 50, 60 y 70 $.

Gran surtido de abrigos, pardesús y ropa hecha de sastrería de todas clases, camisas, fluses y pardesús de casimir para niños de 6 á 15 años, y toda clase de artículos de fantasía para señoras y niños, y los precios son análogos.—**Galiano número 89, esquina á San Rafael.** 6b25f

## CARNAVAL.

PARA

## LOS BAILES DE MÁSCARAS.

Gran surtido de dominós y de otros elegantes trajes de novedad, antifaz Lucrecia de terciopelo y de raso, caretas de alambre con movimiento y sin él, id. de cera, id. de carton de todas clases y de raso, medias, guantes, chalinas, camisetas negras, gorros de seda, cintas, pastillas postizas, narices y otras muchas cosas para los que quieran disfrazarse. **LA ELEGANTE. sol n. 100,** esquina á Villegas.

Nota.—En los dias de baile habrá despacho toda la noche y un salon dispuesto para las personas que se quieran distrazar en él. 5 1mz

## AVISO AL PÚBLICO.

La persona de gusto (que tenga un buen caballo) y desee lucir cual nadie en la Procesion Cívica que se prepara, que acuda á la talabartería «La Casualidad» calle de la Muralla núm. 78, donde hallará una silla, hecha en el país, la cual no pudo figurar en la Exposicion de Filadelfia, con cuyo objeto se hizo, porque una enfermedad ingrata impidió al artista poderla concluir á debido tiempo.

Nay tambien una preciosa montura á la mejicana trabajada primorosamente, la cual se da en módico precio aunque es de un mérito indisputable.

Acudid, pues, los que sean amigos de la elegancia y podais disponer de algunos billetes de banco á la calle de la Muralla, núm. 78. 8-22f.

## CARETAS DE CARTON

**Caretas de raso**

**CARETAS DE CERA, CAAETAS DE ALAMRRE.**

**Narices, cabezas y caretas de todas clases.**

Se venta en la fábrica situada en la calle de Espada núm. 10 entre Chacon y Cuarteles, depósito de vinos. 4bp22f.

*Fuegos artificiales chinescos y otras novedades.*

A un peso la copita de fuegos de salon.

A un peso el ramillete de flores metálica de luz electrica. A un peso las preciosas luces de Tableau surtidas y otras novedades del Japon. Muralla 80. 5bp1°M.

## PRIMERA AGENCIA

DE

## POMPAS FUNEBRES

DE

**D. RAMON GUILLOT,**

**Aguiar 72, esquina á San Juan de Dios.**

Este establecimiento, el más antiguo por su fundacion y más moderno por sus efectos, pues constantemente se están introduciendo mejoras segun los adelantos del dia, se halla expresamente surtido para el buen desempeño del servicio fúnebre, desde el acto de la administracion, cuidado y honras por humildes que sean, hasta las más suntuosas que puedan hacerse en las principales ciudades de Europa y América.

En este establecimiento es donde unicamente existe el depósito de los elegantes y lijeros SARCOFAGO-METÁLICOS ultimamente inventados,—que cierran herméticamente, pudiendo conservar el cadaver en la casa todo el tiempo que se desee sin necesidad de embalsamiento; *habiendo sido aprobados por el Gobierno y la Junta de Sanidad.* Se venden á los dueños de los trenes de toda la isla, así como sarcofagos de madera hechos en los Estados-Unidos, y adornos de todas clases para los mismos.

Se reciben las órdenes de los que se sirvan ocuparme en dicho tren á todas horas y para todos puntos.

Precios al alcance de todos ms

## CARNAVAL.

Caretas de todas clases, gran surtido, Las tenemos hasta $7 la gruesa. Muralla, 80. 5bp1°M

## PARA LAS FIESTAS REALES Y CARNAVAL!

Depositado para su venta en casa de los señores POLONY y Co., Dragones 14, el **Jaxaxá** más elegante, más lujoso y más de moda que existe en la Habana; es de un primer fabricante de París, costó TRES MIL PESOS ORO, y su dueño ausente en Europa, determina por telegrama cederlo en manos de la mitad de su valor.—En el mismo establecimiento se venden TODA CLASE de carruajes de lujo, y en mucha proporcion. 8b26f

## CASTRUCH

## PELUQUERIA.

**SAN RAFAEL,**

CASI ESQUINA A GALIANO.

*Inmediato á la peletería LA MODA.*

Reformado y mejorado este acreditado establecimiento, se ofrece al respetable público en cuanto se relaciona con su giro.

Se han recibido grandes novedades, y cuenta esta casa con acreditados artistas, para satisfacer el gusto más exijente y caprichoso.

Confeccional con arreglo á los últimos figurines, TRENZAS IMPERIALES, LISAS Y RIZADAS, BUCLES, PELUCAS, etc., etc.

## CASTRUCH.

**SAN RAFAEL ESQUINA Á GALIANO.** 4-3mx

## PELUQUERIA

## LA BELLA HABANERA.

*Especial para señoras, Muralla, 50.*

Se acaba de recibir un lindísimo surtido de trenzas, las hay propias para el peinado de sombrero las y de 10, 12, 15, 18, 22, 26, 28, 30, 35, 40, 45, 50, 55, 60 65, 70 hasta 100 onzas, la misma variacion que hay en los precios lo hay en colores y tamaños de polvo fino y la montura corta en peinados hechos los hay precisos y baratos, crespo ondeado de polvo largo muy bienes de 5, 6, 8, 10, 12, 14, 15, 18, y 20 pesos par, bucles de 1, 2, 3 y 4 pesos par, son muy buenos y surtidos de todos colores, rizos en ganchos y grupos ondeados, cintas para la frente y todos cuantos postizos se necesita para los peinados de ultima moda tambien hemos recibido un hermoso surtido de adornos como son guirnaldas, lazos blancos y claros propios para las fiestas de la paz, grupos dorados, rosas sueltas, plumas con espigas muy bonitas de última moda, tambien tenemos perfumería de los mejores fabricantes, todo barato.

**La Bella Habanera,** Muralla, 50 entre Compostela y Aguacate frente á la Sedería de Mestre.—En la misma se peinan señoras. bp7m.

## AVISO Á MIS FAVORECEDORES.

El depósito de vinos que se hallaba en la calle del Aguila 91, se ha trasladado á la de Aguacate 56, entre Obispo y O-Reilly, en cuya casa se hallarán constantemente los superiores y puro vinos de Rioja. 30-15f

## COMESTIBLES Y BEBIDAS.

## AVISO.

Ricla 61.—Huevos á 17 por un peso, desde un peso hasta mil. 4b26F.

## HAN LLEGADO

Los esquisitos vinos Navarros en cajas y cuartorolas de las muy acreditadas bodegas de

TURICALDAY, ECHEVARRÍA Y C.ª

de Bilbao.—En cajas marcas Primavera y otoño. Cuartorolas Navarro marca SOL de Eloja marca COLON y Valdepeñas marca SANZ.

Los expenden al por mayor y detallan sus únicos receptores en toda la isla.—LARREA, EGUIDARU y Cp.ª—Teniente Rey núm. 5. 6m15

## MANTECA PURA

DE LA ACREDITADA REFINERÍA DE

**V. W. MACFARLANE Y Co.**

*Ns. 22, 24 y 26 Tenth Avenue.*

**NEW-YORK.**

## MARCA DEL AGUILA.

Esta manteca nunca jamás ha tenido mezcla de agua ni de ningun cuerpo extraño.

De ella se embarcan grandes cantidades para Europa, donde ha sido repetidamente analizada por eminentes químicos, quienes la han declarado perfectamente pura y sana.

Los consumidores pueden usarla con completa confianza, y someteria á todas las pruebas que quieran, seguros de que la encontrarán siempre igual: siempre pura y sin mezcla, blanca y de excelente olor.

Hállase de venta al pormenor en el almacen de los Sres. *A. T. Callejas y C.ª* calle de *San Rafael n. 14.* 5mv

## LIBROS É IMPRESOS.

## EL LEGO.

**SEMANARIO FESTIVO,**

ilustrado con caricaturas

POR

**D. VÍCTOR P. DE LANDALUCE.**

Administracion:

**Teniente-Rey 38.**

Se ruega á las personas que quieran suscribirse á dicho periódico que lo participen á esta Administracion, á fin de poderles servir con puntualidad los números.

*El Administ